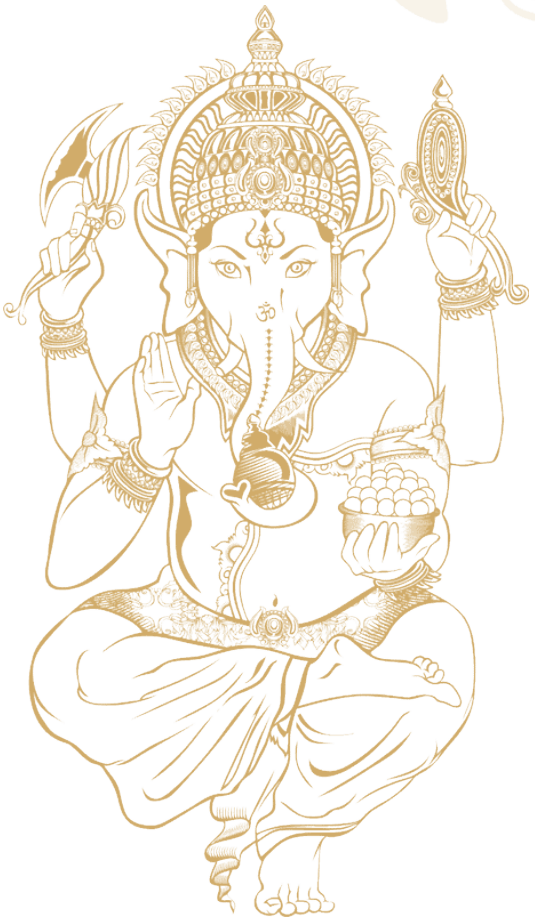

Pradnya Bapat

25 Feb 1997

02:30 AM

Chiplun

Model: Web-KundliPhal **Order No: 120687301**

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**24-25/02/1997**
दिवस	सोम–मंगळवार
जन्म समय	**02:30:00 कला**
इष्ट	48:50:13 घटी
स्थान	**Chiplun**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	17:32:00 उत्तर
रेखांश	73:32:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:35:52 कला
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 कला
स्थानिक वेल	01:54:08 कला
वेलान्तर	-00:13:16 कला
साम्पातिक वेल	12:13:13 कला
सूर्योदय	06:57:54 कला
सूर्यास्त	18:40:29 कला
दिनमान	11:42:35 कला
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	वसन्त
सूर्याचे अंश	12:28:53 कुम्भ
लग्नाचे अंश	02:00:49 धनु

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	धनु – गुरु
राशि–स्वामी	**कन्या – बुध**
नक्षत्र–चरण	**उ.फाल्गुनी – 4**
नक्षत्र स्वामी	रवि
योग	शूल
करण	वणिज
गण	मनुष्य
योनि	गौ
नाड़ी	आद्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	मानव
वर्ग	उंदीर
युँजा	मध्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	पी–पिंगला
पाया(राशि–नक्षत्र)	ताम्र – रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मीन

पंचांग

आजोबांचें नांव _____:
बडीलांचे नांव _____:
आईचें नांव _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	माह	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1918	फाल्गुन	6
पंजाबी	संवत : 2053	फाल्गुन	14
बंगाली	सन् : 1403	फाल्गुन	13
तमिल	संवत : 2053	मासी	14
केरल	कोल्लम : 1172	कुभम	13
नेपाली	संवत : 2053	फाल्गुन	14
चैत्रादी	संवत : 2053	फाल्गुन	कृष्ण 3
कार्तिकादी	संवत : 2053	माघ	कृष्ण 3

पंचांग

सूर्योदय समयी तिथि _____: 2
तिथि समाप्ति वेल _____: 21:01:21
जन्म तिथि _____: 3
सूर्योदय समयी नक्षत्र _____: उ.फाल्गुनी
नक्षत्र समाप्ति वेल _____: 28:33:16 कला
जन्म योग _____: उ.फाल्गुनी
सूर्योदय समयी योग _____: धृति
योग समाप्ति वेल _____: 17:36:42 कला
जन्म योग _____: शूल
सूर्योदय समयी करण _____: तैतिल
करण समाप्ति वेल _____: 07:48:36 कला
जन्म करण _____: वणिज
भयात _____: 62:02:34
भभोग _____: 67:10:44
भोग्य दशा वेल _____: सूर्य 0 वर्ष 5 मा 16 दि

घात चक्र

मास _____: भाद्रपद
तिथि _____: 5-10-15
दिवस _____: शनिवार
नक्षत्र _____: श्रवण
योग _____: शुक्ल
करण _____: कौलव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मांजर
लग्न _____: मीन
रवि _____: मेष
चन्द्र _____: वृश्चिक
मंगळ _____: वृषभ
बुध _____: मीन
गुरु _____: मिथुन
शुक्र _____: कर्क
शनि _____: मीन
राहु _____: सिंह

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

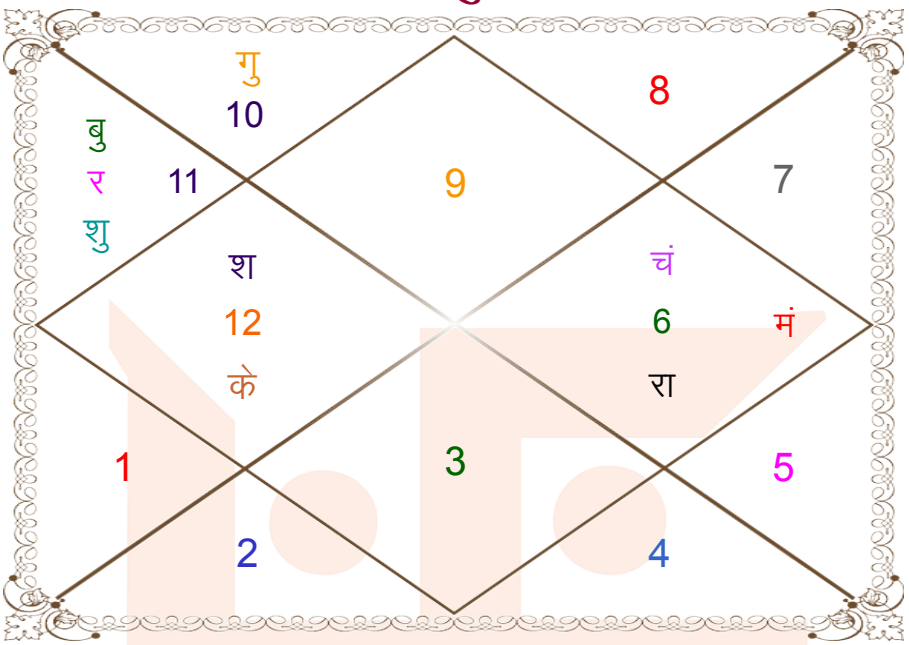

चन्द्र कुंडली

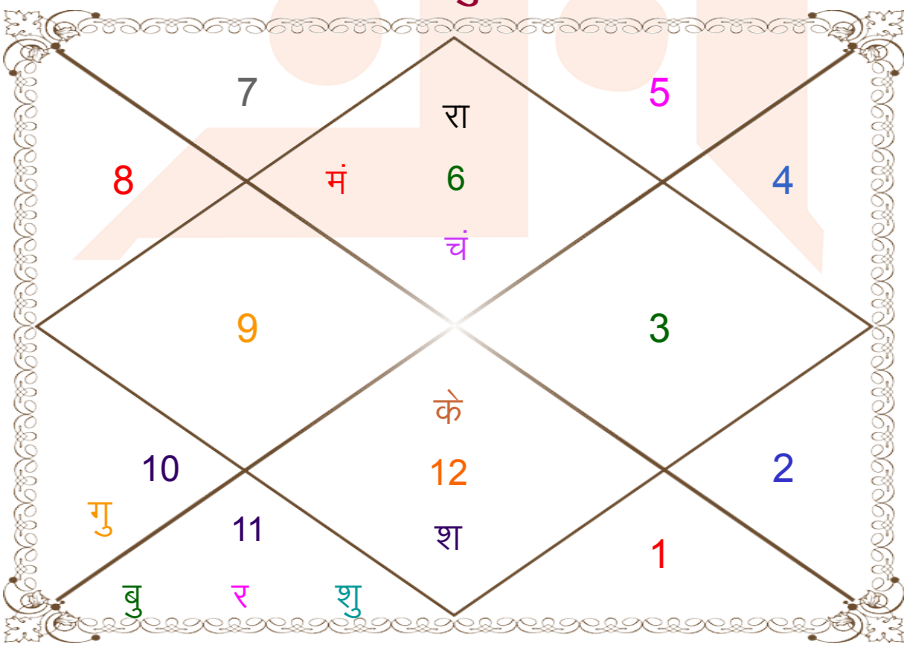

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

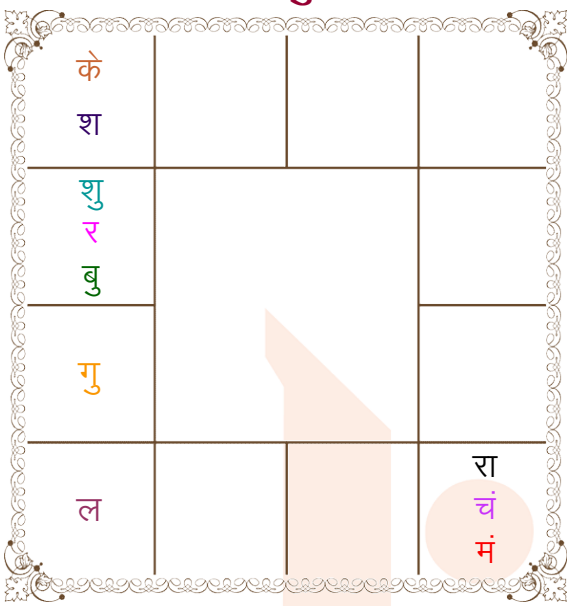

लग्न कुंडली

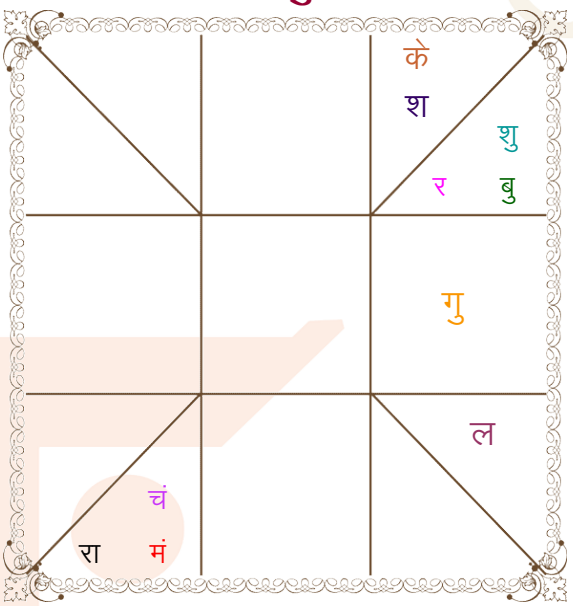

विंशोत्तरी

रवि 0वर्ष 5मा 16दि

रवि

25/02/1997

13/08/2111

रवि	12/08/1997
चन्द्र	12/08/2007
मंगळ	12/08/2014
राहु	12/08/2032
गुरु	12/08/2048
शनि	12/08/2067
बुध	12/08/2084
केतु	12/08/2091
शुक्र	13/08/2111

योगिनी

सिद्धा 0वर्ष 6मा 13दि

उल्का

09/09/2020

09/09/2026

उल्का	09/09/2021
सिद्धा	09/11/2022
संकटा	10/03/2024
मंगळा	10/05/2024
पिंगला	09/09/2024
धान्या	10/03/2025
भ्रामरी	09/11/2025
भद्रिका	09/09/2026

ग्रह स्पष्ट तथा त्यांची स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			धनु	02:00:49	328:03:21	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	----
सूर्य			कुंभ	12:28:53	01:00:20	शतभिषा	2	24	शनि	राहु	शनि	शत्रु राशि
चंद्र			कन्या	08:58:36	11:56:59	उ.फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	शुक्र	मित्र राशि
मंगळ	व		कन्या	09:49:37	00:14:26	उ.फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	शुक्र	शत्रु राशि
बुध		अ	कुंभ	00:33:50	01:40:54	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगळ	बुध	सम राशि
गुरु			मक	14:04:45	00:13:17	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	गुरु	नीच राशि
शुक्र		अ	कुंभ	03:19:07	01:14:58	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगळ	शुक्र	मित्र राशि
शनि			मीन	12:17:03	00:06:52	उ.भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	मंगळ	सम राशि
राहु			कन्या	04:55:03	00:00:22	उ.फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	शनि	मूलत्रिकोण
केतु			मीन	04:55:03	00:00:22	उ.भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	मूलत्रिकोण
हर्ष			मक	12:35:02	00:03:10	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	राहु	----
नेप			मक	05:00:26	00:01:54	उत्तराषाढ़ा	3	21	शनि	सूर्य	शनि	----
प्लूटो			वृश्चि	11:44:42	00:00:25	अनुराधा	3	17	मंगळ	शनि	चंद्र	----
दशम भाव			कन्या	09:47:09	--	उ.फाल्गुनी	--	12	बुध	सूर्य	शुक्र	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
लाहिरी अयनांश : 23:49:03

लग्न–चलित

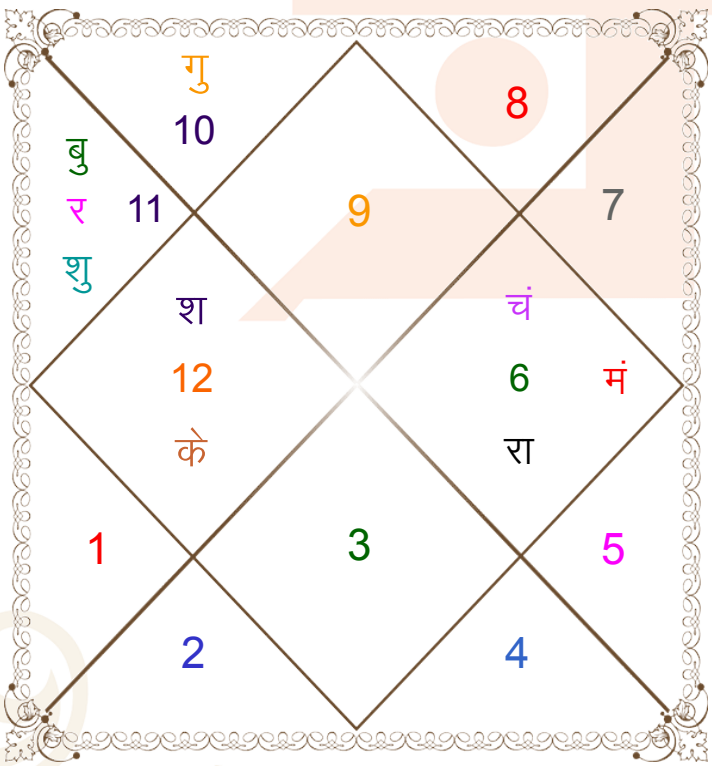

चन्द्र कुंडली

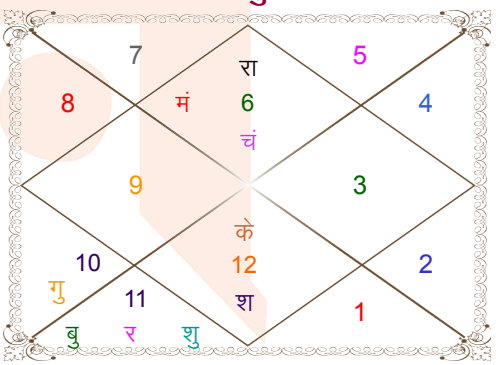

नवमांश कुंडली

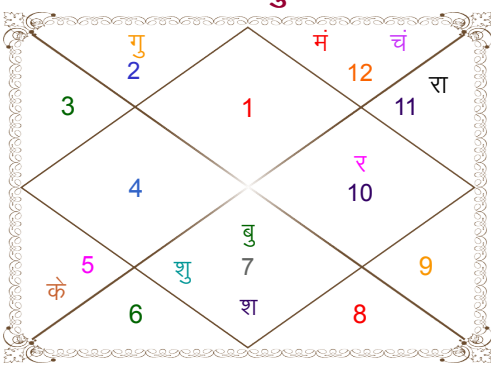

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	वृश्चिक	18:18:32	धनु	02:00:49
2	धनु	18:18:32	मकर	04:36:16
3	मकर	20:53:59	कुम्भ	07:11:42
4	कुम्भ	23:29:26	मीन	09:47:09
5	मीन	23:29:26	मेष	07:11:42
6	मेष	20:53:59	वृषभ	04:36:16
7	वृषभ	18:18:32	मिथुन	02:00:49
8	मिथुन	18:18:32	कर्क	04:36:16
9	कर्क	20:53:59	सिंह	07:11:42
10	सिंह	23:29:26	कन्या	09:47:09
11	कन्या	23:29:26	तुला	07:11:42
12	तुला	20:53:59	वृश्चिक	04:36:16

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	धनु	02:00:49
2	मकर	02:51:30
3	कुम्भ	06:10:22
4	मीन	09:47:09
5	मेष	10:21:36
6	वृषभ	07:08:33
7	मिथुन	02:00:49
8	कर्क	02:51:30
9	सिंह	06:10:22
10	कन्या	09:47:09
11	तुला	10:21:36
12	वृश्चिक	07:08:33

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फाल्गुनी

चलित कुंडली

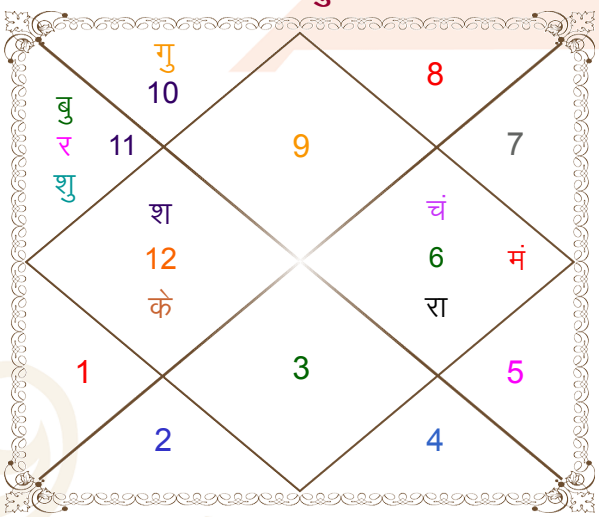

भाव कुंडली

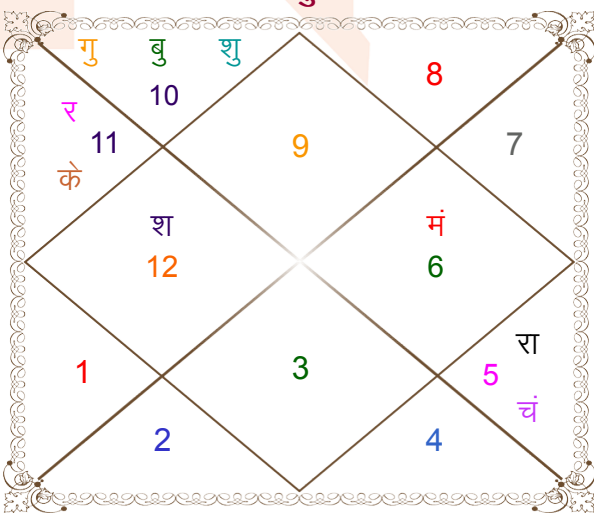

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	——— कारक ———		——— अवस्था ———				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	अमात्य	पितृ	युवा	खल	भोजन	6.80	42 %
चंद्र	पुत्र	मातृ	वृद्ध	मुदित	भोजन	2.70	31 %
मंगळ	मातृ	भ्रातृ	वृद्ध	खल	भोजन	0.46	60 %
बुध	कलत्र	ज्ञाति	बाल	विकल	गमन	0.00	31 %
गुरु	आत्मा	धन	युवा	भीत	सभा	0.42	33 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	बाल	विकल	नेत्रपाणि	7.49	42 %
शनि	भ्रातृ	आयुष्य	युवा	शक्त	गमन	1.26	49 %
राहु	———	ज्ञान	मृत	स्वस्थ	भोजन	0.00	29 %
केतु	———	मोक्ष	मृत	स्वस्थ	भोजन	0.00	29 %
एकुण						**19.14**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फाल्गुनी

चलित कुंडली

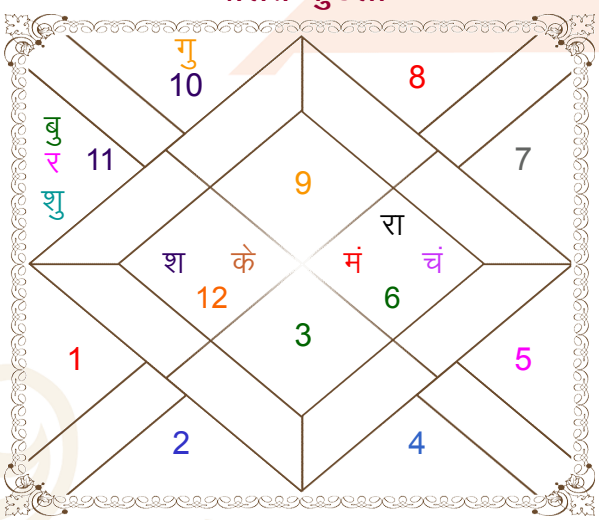

लग्न–चलित

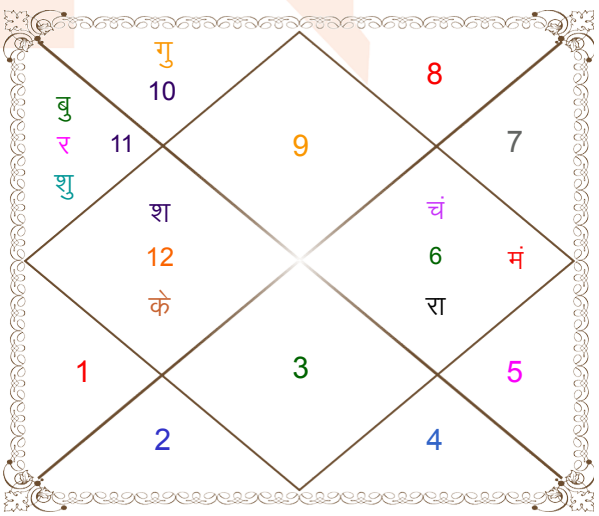

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा वेल : रवि 0 वर्ष 5 महिना 16 दिवस

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगळ 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
25/02/1997		12/08/1997		12/08/2007		12/08/2014		12/08/2032	
12/08/1997		12/08/2007		12/08/2014		12/08/2032		12/08/2048	
00/00/0000	चंद्र	12/06/1998	मंगळ	08/01/2008	राहु	24/04/2017	गुरु	30/09/2034
00/00/0000	मंगळ	11/01/1999	राहु	26/01/2009	गुरु	18/09/2019	शनि	12/04/2037
00/00/0000	राहु	12/07/2000	गुरु	02/01/2010	शनि	25/07/2022	बुध	19/07/2039
00/00/0000	गुरु	11/11/2001	शनि	11/02/2011	बुध	10/02/2025	केतु	24/06/2040
00/00/0000	शनि	12/06/2003	बुध	08/02/2012	केतु	01/03/2026	शुक्र	23/02/2043
00/00/0000	बुध	11/11/2004	केतु	06/07/2012	शुक्र	28/02/2029	सूर्य	12/12/2043
00/00/0000	केतु	12/06/2005	शुक्र	05/09/2013	सूर्य	23/01/2030	चंद्र	12/04/2045
25/02/1997	शुक्र	11/02/2007	सूर्य	11/01/2014	चंद्र	25/07/2031	मंगळ	19/03/2046
शुक्र 12/08/1997	सूर्य	12/08/2007	चंद्र	12/08/2014	मंगळ	12/08/2032	राहु	12/08/2048

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
12/08/2048		12/08/2067		12/08/2084		12/08/2091		13/08/2111	
12/08/2067		12/08/2084		12/08/2091		13/08/2111		26/02/2117	
शनि	15/08/2051	बुध	08/01/2070	केतु	08/01/2085	शुक्र	12/12/2094	सूर्य	01/12/2111
बुध	24/04/2054	केतु	05/01/2071	शुक्र	10/03/2086	सूर्य	12/12/2095	चंद्र	01/06/2112
केतु	03/06/2055	शुक्र	05/11/2073	सूर्य	16/07/2086	चंद्र	12/08/2097	मंगळ	06/10/2112
शुक्र	03/08/2058	सूर्य	12/09/2074	चंद्र	14/02/2087	मंगळ	12/10/2098	राहु	31/08/2113
सूर्य	16/07/2059	चंद्र	11/02/2076	मंगळ	13/07/2087	राहु	13/10/2101	गुरु	19/06/2114
चंद्र	13/02/2061	मंगळ	07/02/2077	राहु	30/07/2088	गुरु	13/06/2104	शनि	01/06/2115
मंगळ	25/03/2062	राहु	28/08/2079	गुरु	06/07/2089	शनि	13/08/2107	बुध	07/04/2116
राहु	29/01/2065	गुरु	02/12/2081	शनि	15/08/2090	बुध	13/06/2110	केतु	13/08/2116
गुरु	12/08/2067	शनि	12/08/2084	बुध	12/08/2091	केतु	13/08/2111	शुक्र	26/02/2117

- वरील दशा चन्द्रमा चे अंशा चे आधार वर्ती दीलेली आहे. भयात भभोग चे आधार अनुसार दशाच्या भोग्यकाल सूर्य 0 वर्ष 5 मा 15 दि होता आहेत.
- वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते. विंशोत्तरी दशा पूर्ण 120 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगळ	
10/02/2025		01/03/2026		28/02/2029		23/01/2030		25/07/2031	
01/03/2026		28/02/2029		23/01/2030		25/07/2031		12/08/2032	
केतु	05/03/2025	शुक्र	30/08/2026	सूर्य	17/03/2029	चंद्र	10/03/2030	मंगळ	16/08/2031
शुक्र	07/05/2025	सूर्य	24/10/2026	चंद्र	13/04/2029	मंगळ	11/04/2030	राहु	13/10/2031
सूर्य	27/05/2025	चंद्र	23/01/2027	मंगळ	02/05/2029	राहु	02/07/2030	गुरु	03/12/2031
चंद्र	28/06/2025	मंगळ	28/03/2027	राहु	21/06/2029	गुरु	13/09/2030	शनि	02/02/2032
मंगळ	20/07/2025	राहु	09/09/2027	गुरु	04/08/2029	शनि	09/12/2030	बुध	27/03/2032
राहु	16/09/2025	गुरु	02/02/2028	शनि	25/09/2029	बुध	24/02/2031	केतु	19/04/2032
गुरु	06/11/2025	शनि	24/07/2028	बुध	10/11/2029	केतु	28/03/2031	शुक्र	21/06/2032
शनि	05/01/2026	बुध	27/12/2028	केतु	29/11/2029	शुक्र	28/06/2031	सूर्य	11/07/2032
बुध	01/03/2026	केतु	28/02/2029	शुक्र	23/01/2030	सूर्य	25/07/2031	चंद्र	12/08/2032

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
12/08/2032		30/09/2034		12/04/2037		19/07/2039		24/06/2040	
30/09/2034		12/04/2037		19/07/2039		24/06/2040		23/02/2043	
गुरु	23/11/2032	शनि	23/02/2035	बुध	07/08/2037	केतु	08/08/2039	शुक्र	03/12/2040
शनि	27/03/2033	बुध	04/07/2035	केतु	25/09/2037	शुक्र	04/10/2039	सूर्य	21/01/2041
बुध	15/07/2033	केतु	27/08/2035	शुक्र	10/02/2038	सूर्य	21/10/2039	चंद्र	12/04/2041
केतु	30/08/2033	शुक्र	29/01/2036	सूर्य	23/03/2038	चंद्र	18/11/2039	मंगळ	08/06/2041
शुक्र	07/01/2034	सूर्य	15/03/2036	चंद्र	31/05/2038	मंगळ	08/12/2039	राहु	01/11/2041
सूर्य	15/02/2034	चंद्र	31/05/2036	मंगळ	18/07/2038	राहु	28/01/2040	गुरु	11/03/2042
चंद्र	20/04/2034	मंगळ	24/07/2036	राहु	19/11/2038	गुरु	14/03/2040	शनि	12/08/2042
मंगळ	05/06/2034	राहु	10/12/2036	गुरु	10/03/2039	शनि	07/05/2040	बुध	28/12/2042
राहु	30/09/2034	गुरु	12/04/2037	शनि	19/07/2039	बुध	24/06/2040	केतु	23/02/2043

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगळ		गुरु - राहु		शनि - शनि	
23/02/2043		12/12/2043		12/04/2045		19/03/2046		12/08/2048	
12/12/2043		12/04/2045		19/03/2046		12/08/2048		15/08/2051	
सूर्य	09/03/2043	चंद्र	22/01/2044	मंगळ	02/05/2045	राहु	28/07/2046	शनि	02/02/2049
चंद्र	03/04/2043	मंगळ	19/02/2044	राहु	22/06/2045	गुरु	22/11/2046	बुध	07/07/2049
मंगळ	20/04/2043	राहु	02/05/2044	गुरु	07/08/2045	शनि	10/04/2047	केतु	09/09/2049
राहु	03/06/2043	गुरु	06/07/2044	शनि	30/09/2045	बुध	12/08/2047	शुक्र	11/03/2050
गुरु	12/07/2043	शनि	21/09/2044	बुध	17/11/2045	केतु	02/10/2047	सूर्य	05/05/2050
शनि	27/08/2043	बुध	29/11/2044	केतु	07/12/2045	शुक्र	26/02/2048	चंद्र	05/08/2050
बुध	07/10/2043	केतु	28/12/2044	शुक्र	02/02/2046	सूर्य	09/04/2048	मंगळ	08/10/2050
केतु	24/10/2043	शुक्र	19/03/2045	सूर्य	19/02/2046	चंद्र	21/06/2048	राहु	22/03/2051
शुक्र	12/12/2043	सूर्य	12/04/2045	चंद्र	19/03/2046	मंगळ	12/08/2048	गुरु	15/08/2051

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
15/08/2051		24/04/2054		03/06/2055		03/08/2058		16/07/2059	
24/04/2054		03/06/2055		03/08/2058		16/07/2059		13/02/2061	
बुध	02/01/2052	केतु	18/05/2054	शुक्र	13/12/2055	सूर्य	20/08/2058	चंद्र	02/09/2059
केतु	28/02/2052	शुक्र	25/07/2054	सूर्य	09/02/2056	चंद्र	18/09/2058	मंगळ	06/10/2059
शुक्र	10/08/2052	सूर्य	14/08/2054	चंद्र	15/05/2056	मंगळ	08/10/2058	राहु	01/01/2060
सूर्य	28/09/2052	चंद्र	17/09/2054	मंगळ	22/07/2056	राहु	29/11/2058	गुरु	18/03/2060
चंद्र	19/12/2052	मंगळ	10/10/2054	राहु	11/01/2057	गुरु	15/01/2059	शनि	17/06/2060
मंगळ	14/02/2053	राहु	10/12/2054	गुरु	14/06/2057	शनि	11/03/2059	बुध	07/09/2060
राहु	12/07/2053	गुरु	02/02/2055	शनि	15/12/2057	बुध	29/04/2059	केतु	11/10/2060
गुरु	20/11/2053	शनि	07/04/2055	बुध	27/05/2058	केतु	19/05/2059	शुक्र	15/01/2061
शनि	24/04/2054	बुध	03/06/2055	केतु	03/08/2058	शुक्र	16/07/2059	सूर्य	13/02/2061

शनि - मंगळ		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु	
13/02/2061		25/03/2062		29/01/2065		12/08/2067		08/01/2070	
25/03/2062		29/01/2065		12/08/2067		08/01/2070		05/01/2071	
मंगळ	09/03/2061	राहु	28/08/2062	गुरु	01/06/2065	बुध	15/12/2067	केतु	29/01/2070
राहु	09/05/2061	गुरु	14/01/2063	शनि	26/10/2065	केतु	04/02/2068	शुक्र	30/03/2070
गुरु	02/07/2061	शनि	28/06/2063	बुध	06/03/2066	शुक्र	30/06/2068	सूर्य	18/04/2070
शनि	04/09/2061	बुध	22/11/2063	केतु	29/04/2066	सूर्य	13/08/2068	चंद्र	18/05/2070
बुध	31/10/2061	केतु	22/01/2064	शुक्र	30/09/2066	चंद्र	25/10/2068	मंगळ	08/06/2070
केतु	24/11/2061	शुक्र	13/07/2064	सूर्य	15/11/2066	मंगळ	15/12/2068	राहु	01/08/2070
शुक्र	30/01/2062	सूर्य	04/09/2064	चंद्र	01/02/2067	राहु	26/04/2069	गुरु	19/09/2070
सूर्य	19/02/2062	चंद्र	29/11/2064	मंगळ	27/03/2067	गुरु	22/08/2069	शनि	15/11/2070
चंद्र	25/03/2062	मंगळ	29/01/2065	राहु	12/08/2067	शनि	08/01/2070	बुध	05/01/2071

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगळ		बुध - राहु	
05/01/2071		05/11/2073		12/09/2074		11/02/2076		07/02/2077	
05/11/2073		12/09/2074		11/02/2076		07/02/2077		28/08/2079	
शुक्र	27/06/2071	सूर्य	21/11/2073	चंद्र	25/10/2074	मंगळ	03/03/2076	राहु	27/06/2077
सूर्य	17/08/2071	चंद्र	16/12/2073	मंगळ	24/11/2074	राहु	26/04/2076	गुरु	29/10/2077
चंद्र	12/11/2071	मंगळ	04/01/2074	राहु	09/02/2075	गुरु	14/06/2076	शनि	26/03/2078
मंगळ	11/01/2072	राहु	19/02/2074	गुरु	19/04/2075	शनि	10/08/2076	बुध	04/08/2078
राहु	14/06/2072	गुरु	02/04/2074	शनि	10/07/2075	बुध	30/09/2076	केतु	28/09/2078
गुरु	30/10/2072	शनि	21/05/2074	बुध	22/09/2075	केतु	21/10/2076	शुक्र	02/03/2079
शनि	12/04/2073	बुध	04/07/2074	केतु	22/10/2075	शुक्र	21/12/2076	सूर्य	18/04/2079
बुध	06/09/2073	केतु	22/07/2074	शुक्र	16/01/2076	सूर्य	08/01/2077	चंद्र	04/07/2079
केतु	05/11/2073	शुक्र	12/09/2074	सूर्य	11/02/2076	चंद्र	07/02/2077	मंगळ	28/08/2079

शुभाशुभ ज्ञान

शुभाशुभ ज्ञान करण्याची आपणास आपल्या मित्र व शत्रुविषयी बोध करते. मूलांक, भाग्यांक व, मित्रांकद्वारे मैत्री व भागीदारी करण्यात फायदा होईल, त्याच प्रमाणे शुभ दिवस व शुभवर्ष प्रगतिकारक ठरेल, शुभग्रहांची, दशा सुद्धा लाभकारक धरते, मित्रलग्न व मित्रराशि लाभदायक अस्ते.

शुभरत्न व धातु तसेच रंग धारण केल्याने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य लाभते, भाग्य रत्न धारण केल्याने भाग्यवृद्धि होते. शुभ वेली कोणत्याही कार्यांचा आरम्भ केल्याने अपेक्षित यश मिलते. इष्टदेव–देवतांचे ध्यान व जप केल्याने मानसिक शक्ति वाढते व यश लवकर मिलते. शुभ पदार्थ, अन्न, द्रव्य इत्यादि चे दान केल्याने ही शुभफल मिलते. व्यापार–उधोग शुभ दिशेला केल्यास त्यात भरभराट होउन अपेक्षत लाभ होतो. शुभ–अशुभ ज्ञानाचा प्रयोग दैनंदिन जीवनात शुभफलदायी ठरतो.

मूलांक	7
भाग्यांक	8
मित्र अंक	2, 3, 6, 7, 8
शत्रु अंक	4, 5,
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिवस	रवि, गुरू, मंगळ
शुभ ग्रह	रवि, गुरु, मंगळ
मित्र राशि	वृषभ, मिथुन
मित्र लग्न	मीन, सिंह, तुला
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	पुष्कराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	माणिक्य
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीला पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	तूप

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं. वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं. यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है. ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो. यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो. मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है. बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है. चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है. उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है. साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है. विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है. जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए. जिन्हें 50–75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए. जो रत्न केवल 25–50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए. अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुष्कराज	गुरु	100%	धन, स्वास्थ्य, सुख
माणिक्य	सूर्य	75%	पराक्रम, भाग्योदय
पोवले	मंगळ	70%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख, कम खर्च
लहसुनिया	केतु	69%	सुख, धन
नीलम	शनि	61%	सुख, धन, पराक्रम
गोमेद	राहु	61%	व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
पन्ना	बुध	53%	पराक्रम, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	41%	पराक्रम हानि, शत्रु व रोग, हानि
मोती	चंद्र	6%	व्यावसायिक हानि, दुर्घटना

रत्न की शुभता

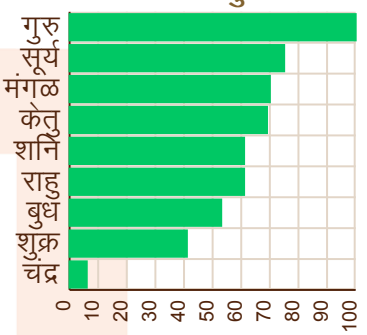

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	पोवले	पन्ना	पुष्कराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
सूर्य	12/08/1997	88%	19%	77%	53%	100%	16%	47%	47%	57%
चंद्र	12/08/2007	81%	31%	70%	59%	100%	41%	61%	47%	57%
मंगळ	12/08/2014	81%	19%	83%	31%	100%	41%	61%	47%	75%
राहु	12/08/2032	62%	0%	58%	53%	100%	52%	67%	74%	57%
गुरु	12/08/2048	81%	19%	77%	31%	100%	16%	61%	61%	69%
शनि	12/08/2067	62%	0%	58%	59%	100%	52%	73%	67%	57%
बुध	12/08/2084	81%	0%	70%	66%	100%	52%	61%	61%	69%
केतु	12/08/2091	62%	0%	77%	53%	100%	52%	47%	47%	82%
शुक्र	13/08/2111	62%	0%	70%	59%	100%	58%	67%	67%	75%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह–नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए पुखराज व माणिक्य रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पुखराज आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

माणिक्य आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए मूंगा, लहसुनिया, नीलम, गोमेद एवं पन्ना रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

हीरा रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

मोती पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। इस रत्न का आप सर्वदा त्याग ही करें, क्योंकि किसी भी दशा या गोचर में इससे शुभ फल प्राप्त होने की आशा कम ही है। इस रत्न को धारण करने से सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु द्वितीय भाव में स्थित है। गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण कर आपकी बुद्धिमत्ता का विकास होता है। यह रत्न वाणी में शुभता, विनम्र वाणी, संचित धन एवं आत्मशक्ति बनाये रखने में सहयोग करेगा। पुखराज की शुभता से आपमें दार्शनिक प्रवृति का भाव जाग्रत होगा। धन-धान्य, यश और सम्मान की प्राप्ति होगी। पुखराज से शैक्षिक क्षेत्र में शुभ परिणाम प्राप्त होंगे। ग्रुरु ग्रह की शुभता को बढ़ाने और अशुभता में कमी करने के लिए आप यह रत्न धारण करें।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में गुरु लग्नेश एवं चतुर्थेश है। गुरु आपके लिए विशेष शुभ ग्रह है अतः आप गुरु रत्न पुखराज धारण कर गुरु की पूर्ण शुभता प्राप्त कर सकते है। पुखराज रत्न धारण से आपको स्वास्थ्य बेहतर होगा। आपके रोगग्रस्त होने की संभावनाएं कम हो सकती है। पुखराज रत्न आपको प्रसन्नचित्त, विवेकी, विनम्र और सौम्य स्वभाव का स्वामी बनाएगा। रत्न प्रभाव से आप धर्म, दया, सेवा विषयों से जुड़ेगें। पुखराज रत्न चतुर्थेश का रत्न होने के कारण आपको माता सुख, भूमि-भवन का सुख, संतान से पूर्ण सुख, विद्वान, गुणी, मनोवांछित जीवनसाथी, धर्मपरायण, धनी एवं यशस्वी बना सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थो का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य तीसरे भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न धारण से आपके पराक्रम, प्रताप एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। यह रत्न आपकी कठोरता और अनुशासनप्रियता में कमी करेगा। आपको उदार, हितकारी बनाने में सहयोग करेगा। इसकी शुभता से आप धैर्यवान, पुरुषार्थी एवं स्वाभिमानी गुणों से परिपूर्ण होंगे। माणिक्य रत्न आपकी आत्मा व चित्त की शुद्धि करेगा। भाई-बहनों का प्रियजन बनायेगा। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते है।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में सूर्य दशम भाव के स्वामी है। सूर्य के बेहतर फल

प्राप्त करने के लिए आप सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर सकते है। माणिक्य रत्न आपका भाग्य रत्न है। यह रत्न आपको भाग्य का अनुकूल सहयोग देगा। माणिक्य रत्न धारण कर आप आत्मिक रूप से बली हो सकते है। यह रत्न आपको शक्तिशाली कर सकता है। आप धर्मपरायण की ओर उन्मुख होंगे। आपकी सुरुचि धार्मिक गतिविधियों की ओर हो सकती है। माणिक्य रत्न आपके वैवाहिक सुख के सुखों में वृद्धि करेगा। आपको व्यापार में उन्नति देगा।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल दशम भाव में स्थित है। मंगल रत्न मूंगा धारण करना आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। धन, यश, सुख और वाहनों का सुख प्रदान करेगा। मूंगा रत्न आपको महत्वाकांक्षी और दृढनिश्चयी व्यक्ति बनाएगा। मूंगा रत्न शुभता से बड़े पद और प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। मूंगा रत्न प्रभाव आपको इंजीनियरिंग क्षेत्रों में सफलता प्राप्ति के अवसर दे सकता है। इसके अतिरिक्त यह मंगल आपको शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में कार्यरत पर ओर अधिक अनुकूल सिद्ध हो सकता है। आजीविका क्षेत्र में आपकी नेतृत्व योग्यता का विकास करने में भी मूंगा रत्न शुभ दायक रहेगा।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में मंगल पंचमेश एवं द्वादशेश है। मंगल रत्न मूंगा आपके लिए शुभ रत्न है। मूंगा रत्न धारण करने से नौकरी में बदलाव करना आपके लिए सहज हो सकता है। मूंगा रत्न आप सदाचारी, बुद्धिमान एवं विनम्र हो सकते है। रत्न आपको जीवनसाथी से लाभ, पिता की धार्मिक आस्था, पिता की विदेश यात्रा, कोर्ट-कचहरी के फैसलों में आपके अनुकूल फल प्राप्त करा सकता है। इस रत्न की शुभता आपको संतान से सुख, शयन सम्बन्धी परेशानियां एवं समझौते आपके पक्ष में हो सकते है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती

से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया या इसके उपरत्न धारण करने चाहिए। लहसुनिया रत्न आपको धन-धान्य से समृद्ध करेगा। आप अपने दायित्वों का निर्वाह कुशलता के साथ करेंगे। आपका उत्साह भाव देखते ही बनेगा। माता सुख में कुछ कमी हो सकती है। रत्न प्रभाव से आप चंचल स्वभाव के हो सकते है। देश विदेश से धनार्जन योगा। पैतृक धन में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। घर भूमि भवन के विषयों से सुख की प्राप्ति होगी। लहसुनिया रत्न धारण से केतु ग्रह की शुभता बढ़ती है और अशुभता कम होती है।

केतु मीन राशि में स्थित है तथा इसका स्वामी गुरु दूसरे भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने पर स्व-कुटुम्ब के सुखों में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको जनता व सरकार से सम्मान दिलाएगा। यह रत्न आपको मिथ्या वाद से बचाएगा। साथ ही यह रत्न आपके स्वाभिमान को बढ़ाएगा। रत्न शुभता से जमीन जायदाद के संग्रह में आपको सहयोग प्राप्त होगा। रत्न प्रभाव से आपको धनोपार्जन में सफलता मिलेगी एवं यह रत्न आपको मधुर, सौम्य और प्रिय बोलने का गुण प्रदान करेगा, आपकी संग्रह शक्ति बढ़ाएगा। इसके साथ ही आपकी आर्थिक स्थिति भी बेहतर होगी। इस रत्न को धारण करने पर आपको उत्तम भोजन सेवन की प्राप्ति हो सकती है। परहित में ही आपको आनंद का अनुभव होगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण

करना चाहिए। नीलम रत्न आपको धैर्य संपन्न और लोभरहित रखेगा। इस रत्न के प्रभाव से आप व्यसनहीन, न्यायप्रिय और अतिथियों का सत्कार करने वाले व्यक्ति बनेंगे। आपको प्रचुर मात्रा में धन की प्राप्ति होगी। नीलम रत्न शीघ्र फल देने वाला रत्न है। रत्न के फलस्वरूप आपके पास विभिन्न प्रकार के वाहन होंगे। जन्मस्थान से दूर रहकर आपको तरक्की की प्राप्ति होगी। नौकरी, विवाह, संतान आदि के लिए भी यह रत्न आपके अनुकूल सिद्ध होगा।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में शनि दूसरे भाव एवं तीसरे भाव के स्वामी है। शनि शुभता प्राप्ति के लिए आप शनि रत्न नीलम धारण कर सकते है। नीलम रत्न आपकी शरीर की अस्वस्थता को दूर करने का प्रयास कर सकता है। नीलम रत्न की शुभता से आपको धन व परिवार का सुख प्राप्त होता रहेगा। यह रत्न आपके पराक्रम भाव को बढ़ाएगा। मित्र बंधुओं का सहयोग पाने के लिए भी आप नीलम रत्न धारण कर सकते है। नीलम रत्न की शुभता से आपको कार्यक्षेत्र में अनुकूल परिणाम प्राप्त हो सकते है। यह रत्न सरकारी क्षेत्रों से जुड़े कार्यो के मध्य आने वाली बाधाओं में कमी कर सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु दशम भाव में स्थित है। अतः आप राहु रत्न गोमेद धारण करें। गोमेद रत्न आपको बलवान और निडर बनाएगा। गोमेद की शुभता से आप बुद्धिमान, परोपकारी, सफल, सम्मानित, कीर्तिमान और श्रेष्ठ बनेंगे। रत्न शुभता से आप कार्यक्षेत्र में अपने शत्रुओं को परास्त करने में सफल होंगे। रत्न शुभता आपको व्यापारिक निपुणता और यात्राओं से लाभ देगी। गोमेद रत्न की अनुकूलता आपको अदालती कामों में विजय देगी। इसके अलावा रत्न प्रभाव से आपके कामों में नियमितता आयेगी।

राहु कन्या राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध तीसरे भाव में स्थित है। अतः गोमेद धारण करने से आप बुद्धि और पराक्रम दोनों का प्रयोग कर सफलता पाने का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको परम प्रतापी और अत्यन्त प्रभावशाली बनाएगा। आपको सब प्रकार के सुखों से युक्त करेगा। इस रत्न को धारण करने पर आपको भाई बहनों का सुख प्राप्त होगा। यह रत्न आपके भाग्योदय में सहायक बन आपको अत्यधिक धन प्राप्त करने के अवसर दे सकता है। रत्न शुभता आपके अरिष्टों का नाश करेगी। एवं यह रत्न आपको दृ

ढ़-विवेकी, योगाभ्यासी बनाएगा और आप विद्वान और तीव्र स्मरण शक्ति के स्वामी होंगे।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध तीसरे भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपको व्यापारी सफलता देगा। व्यापारी वर्ग से मित्रवत संबंध स्थापित करेगा। व्यापारादि कार्यों रुचि आती है। आपको भाई-बंधुओं से लाभ प्राप्ति के संयोग बनेगें। रत्न प्रभाव से शौर्य, पराक्रम और वीरता के स्थान पर बुद्धि बल का प्रयोग अधिक करेंगे। लेखन और कला के पक्ष से भी पन्ना रत्न अनुकूल फल देगा। यह रत्न आपको विचार एवं भाव अभिव्यक्ति की योग्यता देगा। स्मरणशक्ति बढ़ाने के लिये आप यह रत्न धारण कर सकते है।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में बुध सप्तमेश एवं दशमेश है। आप बुध रत्न पन्ना धारण कर सकते है। पन्ना रत्न आपको बुद्धिमान और विनोदी प्रवृति दे सकता है। यह रत्न आपको राज्य एवं आजीविका क्षेत्र में बौद्धिक योग्यता से सफलता प्राप्ति दे सकता है। कार्यक्षेत्र में उन्नति और लाभ देने के साथ साथ पन्ना रत्न आपको सहयोगियों से संबंध मधुर कर सकता है। पन्ना रत्न धारण कर आप ससुराल से धन प्राप्ति के योग बना सकता है। बुध रत्न पन्ने की शुभता आपको धन, यश भी दे सकती है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र तीसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शुक्र रत्न हीरा आपके उत्साह, विनम्रता और व्यवहार कुशलता में कमी कर सकता है। यह रत्न आपकी वाणी की मधुरता में भी कमी ला सकता है। हीरा रत्न प्रभाव से आपको कला और यात्राओं में सुख की कमी करा सकता है। आपके वैवाहिक जीवन में कुछ विसंगतियां आ सकती है। वैवाहिक जीवन में निष्ठावान बने रहकर आप अपने वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाए रख सकती है। हीरा रत्न आपके धन लाभ और संपन्नता में कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपकी संकल्पशक्ति भी आंशिक रूप से प्रभावित हो सकती है। विवाह में विलम्ब भी यह रत्न आपको दे सकता है.

आपकी धनु लग्न की कुंडली में शुक्र एकादशेश एवं षष्ठेश है। षष्ठेश शुक्र का हीरा रत्न आपको रोग, ऋण एवं शत्रुओं से कष्ट दे सकता है। इसे पहनने के बाद अपमान, चिंता, शंका, पीड़ा एवं असत्य भाषा की प्रवृत्ति आपमें जन्म ले सकती है। एकादश भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण हीरा आपमें लोभ, स्वार्थ एवं बेईमानी के अवगुण आ सकते है। यह रत्न आपके मामा-मौसी से सुखों में कमी दे सकता है। शत्रुओं को परास्त करने में आपको सामान्य से अधिक मेहनत करनी पड़ सकती है। शुक्र रत्न हीरा प्रभाव से आपको पिता से अल्पसुख प्राप्त हो सकता है। राज्य व कार्यक्षेत्र से अल्प लाभ व सम्मान न्यून मिलता है। हीरा रत्न आपको रोग एवं ऋण की समस्याएं दे सकता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र दशम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने पर आपकी महत्वकांक्षा भावना बढ़ सकती है। आपके दायित्वों का विस्तार हो सकता है। आपको अपने व्यवसाय में कई बार परिवर्तन करने पड़ सकते है। इस रत्न को पहनने पर कार्यक्षेत्र में आपके अधिकांश स्त्रियों से संबंध मधुर न रहें। मोती रत्न आपको आंशिक रूप से अत्यधिक संवेदनशील बना सकता है। जिसके कारण आप अव्यवहारिक हो सकते है। व्यापार और व्यवसाय के मामलों में आपको कार्यकुशलता की कमी का अनुभव हो सकता है। यह रत्न आपकी लोकप्रियता में कमी कर सकता है। अधिक से अधिक की प्राप्ति के लिए आप प्रयासरत हो सकते है। मोती रत्न आपके पिता के स्वास्थ्य में अस्थिरता ला सकता है।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में चंद्र अष्टम भाव के स्वामी है। अष्टमेश चंद्र का मोती रत्न धारण करना आपके लिए कष्टकारी हो सकता है। मोती रत्न आपके रोगों में वृद्धि एवं आयु में कमी दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपको गहरे जल से कष्ट का भय हो सकता है। मोती रत्न आपको नकारात्मक विचारधारा के साथ मानसिक चिंताएं भी अधिक दे सकता है। इस रत्न को पहनने के बाद आप आर्थिक संकटों के कारण दरिद्रता की स्थिति में पहुंच सकते है। मोती रत्न की प्रतिकूलता आपको दुर्भाग्य और ससुराल पक्ष से संबंध खराब कर सकती है। यह रत्न आपके जीवन के सुखों में कमी कर दुःखों में वृद्धि कर सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपको जल के कारण होने वाले रोग हो सकते है।

दशानुसार रत्न विचार

राहु
(12/08/2014 - 12/08/2032)

राहु की दशा में आपका पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, नीलम, माणिक्य, मूंगा, लहसुनिया, पन्ना व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(12/08/2032 - 12/08/2048)

गुरु की दशा में आपका पुखराज, माणिक्य व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, नीलम व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और मोती व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(12/08/2048 - 12/08/2067)

शनि की दशा में आपका पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, गोमेद, माणिक्य, पन्ना, मूंगा, लहसुनिया व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(12/08/2067 - 12/08/2084)

बुध की दशा में आपका पुखराज व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, लहसुनिया, पन्ना, नीलम, गोमेद व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(12/08/2084 - 12/08/2091)

केतु की दशा में आपका पुखराज, लहसुनिया व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, पन्ना व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(12/08/2091 - 13/08/2111)

शुक्र की दशा में आपका पुखराज व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, नीलम, गोमेद, माणिक्य, पन्ना व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - टोपाज

आपका जन्म धनु राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी गुरु होता है। गुरु सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह ज्योतिष शास्त्र में सबसे शुभ ग्रह माना जाता है तथा गुरु को ज्योतिष में अमृत के समान माना जाता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः धनु राशि के लग्न वाले जातकों को धनु राशि के स्वामी ग्रह गुरु को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। गुरु ग्रह के लिये टोपाज रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी गुरु सलाहकार एवं धन का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को सभा में वाणीपटुता के कारण मार्गदर्शक के रूप में सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को घर के बुजुर्गों तथा गुरुओं का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। गुरु ग्रह ज्ञान एवं धन लाभ का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको लीवर या गुर्दे से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा जिसको धन आगमन में व्यवधान हो रहे हों उनको यह रत्न अल्प प्रयास से धन प्राप्ति करवाता है।

टोपाज रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की तर्जनी अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि तर्जनी अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में गुरु की अंगुली मानी जाती है । टोपाज रत्न गुरु का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात गुरुवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल गुरु की होरा में श्रेष्ठ होता है। गुरुवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय गुरु की होरा का होता है। टोपाज को यदि गुरुवार के साथ-साथ गुरु के नक्षत्र अर्थात् पुनर्वसु, विशाखा और पूर्वा भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

टोपाज को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर पीले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, गुरु के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की तर्जनी अंगुली में धारण करना चाहिए।

गुरु का मंत्र - ऊँ वृं वृहस्पतये नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि गुरु से संबंधित पदार्थ जैसे चने की दाल, गुड़, सवा मीटर पीले कपड़े का दान करें तो टोपाज रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक

फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन गुरु का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और केले की जड़ में जल दें तथा विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें और उनकी उपासना करें तो यह टोपाज रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक गुरुवार को विष्णु जी की उपासना करें तथा विष्णु जी को गुड़ व चने की दाल का भोग लगायें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

धनु लग्न वाले जातक यदि टोपाज रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली धनु लग्न की हैं। आदर्शवादी होने के कारण आप उत्साही रहते हैं। छल-कपट की भावना आपमें नहीं होती और कभी इनके साथ ऐसा होने पर ये लोग काफी समय तक उस बारे में सोचते रहते हैं, तो इन्हें अपनी इस आदत का बदलने का प्रयास करना चाहिए। जीवन में आपके धन संयम/प्रबंधन (वर्तमान में वित्तीय प्रबंधक या सलाहकार) की कला से ओतप्रोत बने रह सकते है। आपमें दूरदर्शिता का गुण भी देखा जाता है जिस कारण इनके कार्यो में हानि की मात्रा में भी कमी आती है।

ईश्वरप्रिय होने के कारण गलत कार्यों से दूरी बनाये रखते हैं और कभी-कभी चिन्तित भी हो जाते हैं। आप हमेशा प्रसन्नचित्त अवस्था में रहने का प्रयास करते है। आप अपनी

बातों में गंभीरता लिये होते हैं। धनी, सम्मानित और समाज में प्रतिष्ठित होने की योग्यता रखते हैं। आप अच्छे सलाहकार साबित हो सकते हैं, परन्तु बिना मांगे किसी को सलाह देने से बचें अन्यथा आलोचना के पात्र बन सकते हैं। आपकी वित्त प्रबंधन / सलाह अच्छी होती है।

षष्ठ, अष्टम व द्वादश भाव दुष्ट व अशुभ स्थान हैं। अपनी कुंडली की शुभता में वृद्धि करने के लिए आपको छः, आठ व बारहवें भाव - भावेश को शुभता प्रदान करनी होगी। कुंडली के ये भाव आपको रोग, ऋण, शत्रु, बाधाएं, देने के साथ साथ दैहिक, सामाजिक, मानसिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्ट दे सकते हैं। इन सभी विषयों के साथ साथ षष्ट भाव प्रतियोगिता, संघर्ष तथा सौतेली माता का भी भाव है।

कुंडली में षष्ट भाव का पीड़ित होना या इस भाव में अन्य ग्रहों का स्थित होना उपरोक्त सभी वस्तुओं में अशुभता लाता हैं। धन, मृत्यु का कारण व समय, अवनति तथा राज्यभंग लग्न से आठंवा भाव अष्टम कहलाता हैं। इस भाव से आयु, बिना कमाया हुआ धन, मृत्यु का कारण व समय, अवनति तथा राज्यभंग की जानकारी प्राप्त होती हैं। अष्टम भाव की तरह द्वादश भाव में भी सभी ग्रह अनिष्ट करते है। द्वादश भाव भी त्रिक भाव है। यह भाव आपकी निद्रा, धन का निवेश, विवाह में विलम्ब, अधिकार का नाश, कैद, शरीर विकार तथा हानियों की जानकारी देता है।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते है।

आपके लग्न के लिए शुक्र षष्ठेश व एकादशेश है, आप की संतान विद्रोही हो सकती है, जीवन साथी से अनबन, मन में खिन्नता, व्यभिचारी तथा बन्धु विरोधी हो सकते हैं।

चन्द्र अष्टमेश हैं। आपके धनु लग्न में अष्टमेश चन्द्र है, चन्द्र की यह स्थिति आपको बचपन में कष्ट, पानी के दुष्प्रभाव से होने वाले रोगों के प्रभाव में शीघ्र आने की संभावना, यह योग धन व सम्मान की हानि का कारण बनता है।

मंगल द्वादशेश तथा पंचमेश होते है। व्यय अधिक, विद्या व बुद्धि से अल्प लाभ, संतान से न्यून सुख, भाई-बहनों से सामान्य सुख, सामान्य पराक्रमी, शत्रु से संघर्ष में सफल, जीवन साथी से कष्ट दे सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 3, 6 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विषयी माहिती

गोचर शनि जेव्हां कुंडलीतीत चंद्राला बारावा, पहिला व दूसरा येईल, तेव्हा साडेसाती सुरु होते. कुंडलीतीत चन्द्राला गोचर शनि चौथा व आठवा आला असता, ढैय्या म्हणजे अडीचकी सुरु होते. साडेसाती चा प्रभाव साडेसात वर्ष व ढैय्या चा प्रभाव अडीच वर्षें मानला गेला आहे साडेसाती चा प्रभाव सामान्यापणे शारिरीक, मानसिक व आर्थिक त्रासाचा जातो तर काहीवेलप आश्चर्यचकित प्रगतिही या कालात होते.

सामान्यापणे मनुष्याच्या जीवनात साडेसाती तीन वेला एते– पहिल्यांदा बालपणि, दूस्रयांदा तरुणपणि व तीस्रयांदा म्हातारपणि. पहिलया साडेसाती चा प्रभाव शिक्षण व आई–वडिलावर पडतो. दुस्रया साडेसाती चा प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति व कुटुंबावर पड़तो. तिसरया साडेसाती चा प्रभाव शारिरीक आरोग्यावर पडतो.

खाली दिलेल्या कोष्टकवरुन साडेसाती चा काल व प्रत्येक अडीचकी (ढय्या) चे शुभाशुभ फलासंबंधीची माहिती समजू शकेल.

प्रथम चक्रः

अष्टमस्थान चरण	17/04/1998-07/06/2000	----------	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------
चतुर्थस्थान चरण	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------

द्वितीय चक्रः

अष्टमस्थान चरण	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढ़ेसातीचा पहला चरण	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
चतुर्थस्थान चरण	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------

तृतीय चक्रः

अष्टमस्थान चरण	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	30/08/2068-04/11/2070	----------	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------
चतुर्थस्थान चरण	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	----------

शनि चा ढैया फल

ढैया चा प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टमस्थान चरण	सम	सन्तति कष्ट
साढ़ेसातीचा पहला चरण	सम	बदनामी
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	शुभ	व्यावसाय
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	शुभ	धनार्जन
चतुर्थस्थान चरण	सम	स्वास्थ्य

साढेसाती वर उपाय

शनि च्या साडेसाती दरम्यान होणार्या अशुभ प्रभावांची तीव्रता कमी होना साठी दान, पूजन व्रत, मंत्रोच्चार आदि उपाय आहेत. शनिवारी काली काम्बल, काली उड़द, काले–तिल, कालयारंगाची चर्मची चप्पल, काले कापड़, लोखंडाचे दान करावे. शनिदेवाची पूजा, दर्शन व शनिवार चा उपवास करावा उपावास च्या दिवशी फले उड़द चा खाध वस्तु, हरभरे, बेसन, काले तिल, काले मीठ या वस्तुंचेच सेवन करावे पाईजे. स्वतः किवां योग्य गुरुजीकड्न खालील शनिमंत्रचा 19000 जप करुन ध्यावा.

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि चा साडेसातीत शारीरिक, मानसिक व कौटुंबिक शान्ति आणि समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता व अंगीकृत कार्यात प्रगति होण्या साठी खालील महामृत्युंजय मंत्रचा 125000 जप स्वतः करावा किंवा योग्य पूरोहिताकड्न करवून ध्यावा.

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

किवां खालील मंत्रचा कमीत कमी 108 वेला जप करावौं.

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

साढ़ेसाती च अशुभत्व कमी करुन् शुभत्व वाढवण्या साठी 5–1/4 रत्ती वजना च नीलम रत्न पंचधातु उजव्या हाताचा मध्ल्या बोटात धारण करावे. घोडायाच्या नालेची किंवा बोटीच्या कीलची अंगठी मधल्या बोटात वापरवी.

अंगठी किंवा पेन्डन्ट शुक्ल पक्षा चा शनिवारी सायंकाली सूयदृस्ता चा अर्धातास पूवदृ धारण करावी. पुष्य, अनुराधा किंवा उतरा भाद्रपदा या नक्षत्र पैकी जे नक्षत्र शनिवारी असेल त्या दिवशी अंगठी धारण करावी. अंगठी धारण करण्या पूवदृ शुद्ध निरसे दूध व गंगाजलानें अंगठीस अभिषेक करावा. धूप–दीप लावून पूजा करावी व खालील मंत्र 108 वेला जपून अंगुठी धारण करावी.

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगठी धारण केल्या नंतर शनि च्या वस्तूंचे दान करावे या मुले शनिचा अशुभ परिणामांची तीव्रता कमी होईल व आपल्या सुख–शान्ति–समृद्धि ची वाढ़ होईल.

मांगलिक विचार

जेह्वा वर किंवा कन्या ची कुंडलीत मंगल–लग्नात् चतुर्थ अष्टम् द्वादश भावात असेल तर असा मांगलिक दोष होतात.।। यथोक्तम्।। लग्ने ब्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे. स्त्री भर्तुविनाशाय भर्तुः पत्नी विनाशयेत. मांगळिक दोष लग्न पासून जास्ती प्रबल होतात, पण चंद्रमा पासून यांचा दोष कम आहे. जर शस्त्रनुसार वर अणि कन्या चा मांगळिक दोष भंग होतात तर यांचे दम्पती जीवन सुखी अणि प्रसन्नता युद्ध होतात. यांचे विपरीत बगैर दोष भंग झाले, मांगळिक वर कन्या ला जीवनां चे अनेक अनावश्यक त्रास तसेच अडचणांचे सामना होणार. अतः विवाहा पूर्वी शुद्ध कुंडली मिलान करून हा दोष उचित निवारण करून दांपत्य जीवन शुरू कराय ला पहिजे. ज्यापासून जीवनात शान्ती तसेच संपन्नता होणारी.

****

तुमची जन्म कुंडळीत मंगळ चंद्रमा बरोबर आहे यद्यपि चंद्र पासून मंगळ दोष जास्ती नाय होतात, तसेच यांचे प्रभाव पासून तुमचा शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहणार पण मनाची त्रास होउ सकतात, कधीं–मधीं असा अनुभव होणार. स्वभावात तीव्रता रहणारी हा मंगळ तुमचे विवाह मधे अनावश्यक उसीर करणार तसेच गेलेला दिवसांचे वार्ता पण खोटे करू सकतो या मुळे शारीरिक आणि मानसिक त्रास होउ सकतात. चन्द्र बरोबर मंगल ची युति होण्या मुळे तुमचा शारीरिक आणि मानसिक स्वास्थ्य सामान्य रहणार लग्न पासून चतुर्थ दृष्टि मुळे तुमचे जीवनात भौतिक सुख संसाधना चा प्राप्ती परिश्रम पासून होणार. ह्या साठी तुम्हाला फार परिश्रम होउ सकतात. सप्तम भाव वर मंगळ ची दृष्टि पासून नवरा चा स्वास्थ्य सामान्य रहणार तसेच लवकर गुस्से ची नेहमी स्थिति होणारी ज्या मुळे कधीं–मधीं सम्बन्धातील त्रास येणार. अष्टम भाव वर मंगळ ची दृष्टि होण्या मुळे सांसारिक महत्वपूर्ण कार्याला काही विघ्न आणि अडचणे येणार तसेच कार्य सिद्धि साठी वेळ लागणार पण स्वतः चे परिश्रम आणि पराक्रम पासून सर्व कार्याला अड़चनांची खात्मा–सामना, आणि सामाधान कराय साठी समर्थ होणारी. अतः मंगळ चा अशुभ प्रभाव कम कराय साठी आणि स्वतः चा जीवन सुखी ठेवाय साठी तुम्हाला काही उचित मांगळिक युवक बरोबर विवाह करायला पाहिजे ज्या मुळे तुमचा मंगळ दोष भंग होउ सकतात. हा दोष भंग होण्या वर तुमचा शारीरिक आणि मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहणार तसेच जीवना चे आवश्यक सुख साधन अर्जित होणार. आणि उपभोग होणार. आपण चल आणि अचल संपत्ति चे मालक होणारी राजनैतिक लाभ सुखी रहणार जीवनात धन यैश्वर्य सौभाग्य आणि शुभ प्रभाव पासून सुखी दांपत्य जीवन व्यतीत करणारी. कुंडली मिलान समयी ज्या युवक ची कुंडलीत मंगळ चंद्रमा बरोबर असेल तर असा विवाह शुभ नाय होणार समान भावात मंगळ शारीरिक आणि मानसिक स्वभाव प्रभावित करतात इतर भावात मंगळ दोष भंग करतात तसेच दांपत्य जीवन सुखी होणार. ह्या प्रकारी सावध होउन आणि लक्षात ठेउन कुंडली मिलान करून निर्णय होणार पाहिजे.

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में घातक नामक कालसर्प योग अनुदित रूप में विद्यमान है। लेकिन यह राहु/केतु के साथ सूर्य/चन्द्र होने के कारण विशेष प्रभावशाली है। फलस्वरूप जातक को नाना-नानी या दादा-दादी का वियोग सहना पड़ता है। माता-पिता का भी विरह सहना पड़ता है। जातक का वैवाहिक जीवन कष्टमय व्यतीत होता है। जातक की सन्तान अस्वस्थ रहती हैं। घर में सुख शान्ति का अभाव रहता है और जातक को नौकरी व्यवसाय में अनसोची मुश्किलें आती हैं एवं कभी-कभी पदच्युत होने की सम्भावना बन जाती है। व्यापार कार्य में अत्यधिक परिश्रम करने के बाद भी व्यापार जमता नहीं या निरन्तर घाटे में रहता है। जिस कारण जातक को क्लेश घेरे रहता है। भागीदारी में जातक को मनमुटाव की स्थिति पैदा हो जाती है। जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे सब षड्यन्त्र करते रहते हैं। जिसमें केवल नुकसान ही प्राप्त होता है। सरकारी पदाधिकारियों से अनबन रहती है। मित्रगण समय पर धोखा दे जाते हैं और जातक को राज्य पक्ष से भी क्षति उठानी पड़ती है।

इस योग के प्रभाव से जातक को शारीरिक रोग व्याधि घेरे रहती है। जिसमें अधिक धन खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति नाजुक हो जाती है एवं निरन्तर चिन्ता परेशनी घेरे रहती है। सुख शान्ति प्राप्ति करने के लिए संघर्ष करना पड़ता है।

इस योग के प्रभाव से जातक को परिवार में प्रतिष्ठा नहीं मिलती। जातक की स्थिति कभी राजा तो कभी रंक जैसा जीवन चलता रहता है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक अपने जीवन में बहुत अच्छा पद, प्रतिष्ठा प्राप्त करता है और प्रसिद्धि भी मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. शुभ मुहूर्त में शिवलिंग पर ताम्बे का सर्प अनुष्ठानपूर्वक समर्पित करें।
3. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में मसूर की दाल सात बार प्रवाहित करें।
4. शुभ मुहूर्त में एकाक्षी नारियल अपने ऊपर से सात बार उतारकर सात बुधवार के दिन यमुना जी या बहते पानी में प्रवाहित करें।
5. प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित लहसुनिया धारण करें।
7. केतु मन्त्र का 18 अट्ठारह हजार (18000) जप करें या करवायें। केतु की दशा अन्तर्दशा में करवाना अधिक श्रेयष्कर है।
8. एक वर्ष तक गणपत्यथर्वशीर्ष का नित्यपाठ करें।

9. कम्बल, धूम्रवस्त्र, शस्त्र, सप्तधान्य, तेल आदि शुभ मुहूर्त्त में समय-समय पर दान करें।
10. सात शनिवार को देवदारु, सरसों तथा लोहवान इन तीनों को उबाल कर स्नान करें।
11. शयनकक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग जीवन भर करें।
12. सर्वतो भद्र मण्डल यन्त्र को पूजित कर धारण करें।
13. शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत आरंभ करना चाहिए। यह व्रत 18 करें।काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीज मन्त्र की माला जपें। तदन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुश लेकर पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है।
- पंचम् भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में चन्द्र और मंगळ के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी "ऊँ नमः शिवाय" का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त

वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

तृतीय भाव में सूर्य हो तो जातक, सरकार से सम्मान प्राप्त, कवि, भाई और सम्बन्धियों के कारण दुःखी, पराक्रमी, प्रतापशाली, लब्धप्रतिष्ठ एवं बलवान् होता है।

कुम्भ राशि में रवि हो तो जातक स्थिरचित्त, स्वार्थी, कार्यदक्ष, क्रोधी, दुःखी, निर्धन, अच्छा ज्योतिषी एवं मध्य अवस्था के पश्चात् सन्यास लेने वाला होता है।

आपके जन्मकाल में सूर्य तृतीय भाव में हैं अतः आपके पिता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं शारीरिक अस्वस्थता अल्प मात्रा में ही रहेगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा तथा जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगे। आपके शक्ति साहस एवं पराक्रम में वृद्धि करने के लिए वे नित्य आपको प्रोत्साहित करते रहेंगे। धन सम्पत्ति का भी उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही वांछित आर्थिक सहायता भी आप उनसे प्राप्त करती रहेंगी।

आपके हृदय में भी उनके प्रति सम्मान का भाव रहेगा तथा अवसरानुकूल आप उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु कभी कभी मतभेद के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा। इसके साथ ही जीवन में पूर्ण रूप से उनकी सेवा तथा सहयोग करना आप अपना कर्तव्य समझेंगी एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगी।

चन्द्र

दसवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कार्यकुशल, व्यापारी, कार्यपरायण, सुखी, यशस्वी, विद्वान्, कुल-दीपक, दयालु, निर्बल बुद्धि, सन्तोषी लोकहितैषी, मानी, प्रसन्नचित्त एवं दीर्घायु होता है।

कन्या राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर, रूपवान, धनी ईमानदार, मधुरभाषी, सदाचारी, धीर, विद्वान, सुखी, सुन्दर वक्ता अधिक कन्या सन्तान वाला, ज्योतिष एवं कला प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति दशम भाव में है। अतः माता का आप पूर्ण स्नेह प्राप्त करेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन सम्पत्ति तथा अन्य आवश्यक सुख संसाधनों से वे युक्त रहेंगी तथा जीवन के आवश्यक कार्यों में आपको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आप आजीविका, व्यापार तथा यश प्राप्ति भी उन्हीं के सहयोग से अर्जित करने में सफल होंगी।

आप उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा यदा कदा आपस में सैद्धान्तिक मतभेद होंगे किन्तु उससे आपके संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। आप भी

उनकी सुख सुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा हर सम्भव उनका सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगी। इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए सामान्य रूप से शुभ ही समझी जाएंगी।

मंगल

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा उनमें शारीरिक दुर्बलता भी परिलक्षित होगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त महत्वपूर्ण कार्य की सिद्धि में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपके साथ रहेंगे। तथा नौकरी या व्यापारादि में आपका सहयोग करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। लेकिन कभी कभी आपसी मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अल्प समय तक रहेगी। साथ ही आप उनकी आजीविका संबंधी कार्यों में में यथाशक्ति आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करती रहेंगी।

बुध

तृतीयभाव में बुध हो तो जातक सद्गुणी, कार्यदक्ष, परिश्रमी, मित्रप्रेमी, भीरु, धर्मात्मा, यात्राशील, व्यवसायी, चंचल, अल्पभ्रातृवान्, विलासी, सन्ततिवान्, कवि, सम्पादक, सामुद्रिकशास्त्र का ज्ञाता एवं लेखक होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

गुरु

द्वितीयभाव में गुरु हो तो जातक मधुरभाषी, सम्पत्ति और सन्तितिवान्, सुन्दरशरीर, सदाचारी, पुण्यात्मा, सुकार्यरत, लोकमान्य, राज्यमान्य, व्यवसायी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं भाग्यवान् होता है।

मकर राशि में गुरु हो तो जातक प्रवासी, द्रव्यहीन, व्यर्थपरिश्रमी, चंचलचित्त, धूर्त्त, असभ्य आचरण, दुःखी एवं ईर्ष्यालु होता है।

शुक्र

तृतीय भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, कलाकार, आलसी, कृपण, धनी, सुखी, पराक्रमी, भाग्यवान्, बहने भाईयों से अधिक एवं पर्यटनशील होता है।

कुम्भ राशि में शुक्र हो तो जातक शान्तिप्रिय, दूसरों को सहायता करने वाला, सच्चरित्र, सुन्दर, लोकप्रिय, चिन्ताशील एवं रोग से सन्तप्त होता है।

शनि

चतुर्थभाव में शनि हो तो जातक अपयशी, बलहीन, धूर्त, कपटी, शीघ्रकोपी, कृशदेही, उदासीन,वातपित्तयुक्त एवं भाग्यवान् होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्त्ता एवं आलसी होता है।

कन्या राशि में राहु हो तो जातक लोकप्रिय, मधुरभाषी, कविलेखक, गवैया एवं धनी होता है।

केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

मीन राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमी, धार्मिक प्रवृत्तिवाला, कर्णरोगी, प्रवासी, चंचल और कार्यपरायण होता है।

शारीरिक सौष्ठ, व्यक्तित्व आणि प्रकृति

आपला जन्म धनु लग्नी झाला आहे. त्यामुळे आपले आरोग्य सामान्यतः चांगले राहील व शारीरिकघ्ष्ट्या बलवान असाल. स्वभावाने अत्यंत शांत असला तरी चेहऱ्यावर अभिमान ओसंडत असेल. धर्मावर पूर्ण श्रद्धा असेल व देव–ब्राह्मणांची सेवा करण्यास तत्पर असाल. बुद्धि तीक्ष्ण असेल आणि कोणत्याही गोष्टीबाबत मुळापर्यंत जाण्याची सवय असेल प्रापंचित महत्वाची कामे बुद्धिपूर्वक संपन्न कराल. आपल्या व्यक्तिमत्वाचे वैशिष्ट्य म्हणजे आदर्शवाद व आध्यात्मिकतेची ओढ असली तरी कौटुंबिक सुखाकड आकृष्ट असाल आणि कष्टाने भौतिक सुखसाधने प्राप्त करून त्याचा उपभोग घ्याल. अभ्यासू व्यक्ती असल्याने विभिन्न शास्त्रांचे ज्ञान असेल आणि विद्वान म्हणून लोक तुम्हाला मान देतील. नातेवाईकांमध्ये सुद्धा प्रिय असाल आणि कुटुंबातील सदस्यांचे पोषणसुद्धा कराल.

आयुष्यभर आपली कामे नियमानुसार कराल इतरेजनांच्या मनातील जाणून घेणे तसेच भविष्यवाणी करण्यास समर्थ असाल. निःस्वार्थी वृत्तीने लोकांची सेवा करून विश्वासपात्र बनाल, पण इतरांवर तुमचा विश्वास थोडा कमीच असेल. सत्यवादी व दानशूर असाल. तुमचे वैशिष्ट्य म्हणजे कुणी विचारल्याशिवाय दुसऱ्याच्या मतावर आपले मत प्रगट करणार नाही. धनवैभव व ऐश्वर्ययुक्त असाल व यथोचित सामाजिक मानप्रतिष्ठा व कीती प्राप्त कराल. घोडेस्वारीबद्दल मनात आकर्षण असेल. एक ध्येय घेऊन त्यासाठी संघर्ष करत राहाल आणि अनावश्यक ईर्षा, द्वेष मनात असणार नाही. शत्रू किंवा विरोधकांबदलसुद्धा आपल्या मनामध्ये औदार्य व स्नेह असेल. तुम्हाला केवळ प्रेम व सद्भावनेनेच वश केले जाऊ शकते. भौतिक प्रलोभने तुम्हाला वश करू शकत नाहीत. कायदेविषयक ज्ञान असेल आणि घ्ढसंकल्पाने सर्व कामे कराल. कलांवर प्रेम असेल आणि संधी मिळाली तर तत्संबंधित ज्ञान प्राप्त कराल. राजकारणातसुद्धा धैर्य, व्यवहारकुशल व शांत स्वभावामुळे यश प्राप्त करू शकता. व्यापार, कायदा किंवा प्रशासकीय कार्यातून लाभ होऊ शकतो. अशाप्रकारे आपण एक उदार, दानशूर, मित्रप्रिय, विद्वान, महत्वाकांक्षी, आशावादी, व्यवहारकुशल व शांत स्वभावाने आपले आयुष्य घालवाल. यथोक्तम–

राज्ञः प्राज्ञश्च परिसेवनज्ञः सत्यप्रतिज्ञः सुतरामनोज्ञः।
सुज्ञःकलाज्ञश्चधनुर्विधिज्ञश्चेन्नुर्धनुर्यस्यजनुस्तनुः स्यात।।

– जातकाभरणम

म्हणजे धनु लग्नामध्ये उत्पन्न जातक विद्वान, विधीज्ञ, घ्ढ प्रतिज्ञ, रुपवान, कलाकार व इतर शस्त्रादि विद्यांचा ज्ञाता असतो.

धन, कुटुंब, डोळा आणि वाणी

आपल्या जन्मसमयी द्वितीय भावामध्ये शनिची मकर राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे तुम्ही लोकांना दिलेले वचन पाळू शकणार नाही आणि अधिकांश काळ अनावश्यक गप्पा मारण्यातच जाईल. तुमचा इतका बडबड्या स्वभाव आहे की इतर लोक तुम्च्यावर काबू ठेवू शकणार नाहीत. स्वभावाने आधुनिक विचारांचे असाल आणि विनम्रताही असेल. वैशिष्ट्य म्हणजे तुम्ही कोणालाही विनाकारण मित्र बनवणार नाही आणि अत्यंत विचार करून पूर्ण समाधान झाल्यावरच एखाद्याला मित्र बनवाल.

मनातून कुटुंबावर पूर्ण प्रेम कराल, पण उघडपणे उपेक्षा दाखवाल. त्यामुळे कुटुंबाबरोबर अनावश्यक मतभेद होत राहील, पण त्यांच्याकडून तुम्हाला पूर्ण सुख व मदत मिळत राहील. कुटुंबाच्या सुखासाठी सतत प्रयत्नशील असाल. विभिन्न स्वाद आवडतात आणि संधी मिळेल तेव्हा त्याचा आस्वाद घ्याल. वृद्धावस्थेत डोळ्यांचे विकार होऊ शकतात. नोकरी किंवा इतर साधनांमार्गे अपेक्षित पैसा कमवाल. विदेश भ्रमणातूनही लाभ मिळतील.

आई, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, भूमि आणि शिक्षा

आपल्या जन्मसमयी चतुर्थ भावात गुरूची मीन राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपली आई बुद्धिमान व सुशील स्त्री असेल. स्वभावाने उदार, शांत व दयाळू असेल. सामाजिक कार्य करण्यात त्यांना रस असेल आणि समाजसेवा करण्यात अधिकांश काळ घालवील. तुमची आई विनम्र असेल घरातील वातावरण आधुनिक पद्धतीचे बनवेल. सर्व वस्तू आधुनिक असतील. कौटुंबिक जीवन अतिशय प्रिय असेल.

आपले घर सुंदर व आकर्षक असेल. आधुनिक भौतिक साधने व उपकरणांनी सुसज्जित असेल आणि सर्व आराम व मनोरंजनाच्या सुविधा उपलब्ध असतील. घरामध्ये शांत वातावरण आपल्याला आवडते आणि कोणत्याही प्रकारची अशांती तुम्हाला आवडत नाही. घरची साफसफाई व सजावटीकडे पूर्ण लक्ष असेल. वाहनसंबंधी सुख आपल्याला प्राप्त होईल. उत्तम वाहन असेल. पैतृक संपत्तीची सुद्धा प्राप्ती होईल आणि आनंदाने त्याचा उपभोग घ्याल. शैक्षणिक यश प्राप्त करण्यात आपण प्रतिभाशाली व्यक्ती असाल. विज्ञान, लेखा किंवा गणित विषयांमध्ये आपल्याला रूची असेल आणि या विषयात उच्च शिक्षण घ्याल. त्याचबरोबर ज्योतिष किंवा तंत्र, मंत्रामध्ये रस असेल आणि अपेक्षित ज्ञान प्राप्त कराल. याव्यतिरिक्त व्यापारातून धनार्जन करण्यात सफल, दीर्घसूत्री व धर्मावर पूर्ण श्रद्धा असेल.

बुद्धि, सन्तान आणि लग्न सम्बन्ध

आपल्या जन्मसमयी पंचम भावामध्ये मंगळाची मेष राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण एक बुद्धिमान व्यक्ती असाल. शिक्षणामध्ये विशेष रस असेल आणि भविष्यसुद्धा उज्वल असेल आणि उच्च शिक्षणातून कीती प्राप्त कराल. प्रत्येक क्षेत्रात प्रधान किंवा मुख्य बनण्यात आपल्याला आवडते. प्रेमाच्या विषयात आपले विचार उन्मुक्त असतील. तुमची सुडौल व आकर्षक व्यक्तिमत्व व प्रवृत्तीमुळे सर्वजण आपल्याकडे आकर्षित होतील. तुम्ही नेहमी व्यावहारिक कामे पूर्ण कराल आणि कल्पकतेचा अभाव असेल. प्रवृत्ती स्वच्छंद असेल आणि प्रणयसंबंधात प्रामाणिक उत्साह व परस्पर आपुलकीचा भाव आवडतो.

आपली संतती सीमित असेल. पती व मुलांवर खूप प्रेम कराल आणि त्यांच्या सुखसुविधांकडे पूर्ण लक्ष द्याल. आपले पती सुंदर, चतुर व चांगल्या स्वभावाचे असतील. आपल्या प्रापंचिक कामामध्ये खूप व्यस्त राहिल्यामुळे नियमितपणे पत्नी व मुलांना वेळ देणे कठीण जाईल. परंतु आपली मुले बुद्धिमान असतील आणि उच्च शिक्षण प्राप्त करण्यात समर्थ असतील. धर्मावर श्रद्धा असेल. जुन्या रीतिरिवाजांचे पालन कराल. आपल्या वर्तमान सुखाचे श्रेय पूर्वजन्माच्या पुण्यकर्मांना द्याल. मानसिकघ्ष्ट्या प्रसन्न असाल.

दम्पति, विवाह आणि साझेदार

आपल्या जन्मसमयी सप्तम भावामध्ये बुधाची मिथुन राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपले दाम्पत्य जीवन सुख समृद्धिपूर्ण व शांत असेल. आपल्या गोड हसण्यातून इतरांना आपल्याकडे आकर्षित करू शकाल. पतीसुद्धा आपल्यावर प्रसन्न व संतुष्ट असेल. पती सुंदर, बुद्धिमान, आकर्षक व सुशिक्षित असेल. घरामध्ये आपल्याला पूर्ण सुख व शांती मिळत असली तरी तुम्ही बहुतांश मनोरंजन बाहेर करणे आवडते. पतीसाठी तुम्ही सौभाग्यशाली असाल. चतुराईने आपल्या पतीला आकर्षित व प्रभावित करण्यात यश मिळवाल. एकमेकांच्या व्यक्तिगत गोष्टींमध्ये हस्तक्षेप कमीच कराल. त्यामुळे परस्पर सामंजस्य स्थापन होऊन घरात शांती असेल. पती शांत, चतुर, घ्ढनिश्चयी, नम्र स्वभावाची असेल, पण कधी कधी तापटपणासुद्धा दाखवेल.

तुम्ही किंवा तुमच्या पतीला शिक्षक, उपदेशक, ज्योतिषी, अधिवक्ता, बॅंक कर्मचारी किंवा राजकारणी या क्षेत्रात व्यावसायिक यश व प्रगती होऊन त्यात लाभ मिळेल. कंपनी कायदा, विदेशसंबंधी साहित्याद्वारे यश मिळेल, पण सट्टा, जुगारापासून दूर राहावे. आयुष्यात आकस्मिक धनलाभ होण्याची संभावना असल्याने धनवान बनाल. सर्व भौतिक सुखसाधनांचा उपभोग घ्याल. आपला पती विचारवंत, धनवान, सुंदर आकृती, सर्वगुणसंपन्न व नम्र स्वभावाचा असेल.

पिता, व्यवसाय आणि सामाजिक स्थिति

आपल्या जन्मसमयी दशम भावामध्ये बुधाची कन्या राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपल्या वडिलांचे आरोग्य उत्तम राहील तसेच मानसिकघ्ष्ट्यासुद्धा ते शांत व प्रसन्न असतील. त्यांची बुद्धि सतत नवनवीन काही शिकण्याकडे असेल आणि त्यांच्या बुद्धिमत्तेमुळे लोक प्रभावित होत असतील. कोणतेही काम नियमाप्रमाणे करण्यात रस असेल.

व्यावसायिकघ्ष्ट्या आपल्याला शिक्षण क्षेत्र उपयुक्त आहे. त्याचबरोबर अधिकारी, बॅंक कर्मचारी तसेच राजकारण आपल्यासाठी उपयुक्त होऊ शकते. आपण धार्मिक व शैक्षणिक संस्थांमार्फत उवजीविका करू शकता. ज्योतिष, तंत्र, मंत्र तसेच संपादन, प्रकाशनसंबंधी कामामधूनसुद्धा अतिरिक्त लाभ व सन्मान मिळू शकतो. कंपनी कायदा, इंजीनिअरिंग, विदेशी साहित्यासंबंधी कामे किंवा कंत्राटदारीमधूनही आपण अपेक्षित धनार्जन करू शकता, पण जुगार, मटका, सट्टा इत्यादींपासून दूर राहावे, कारण यामधून लाभापेक्षा हानी जास्त होऊ शकते. याव्यतिरिक्त आपण कार्यदक्ष, नीती तसेच सल्लाकाराच्या रूपाने सन्मान प्राप्त करू शकता.

फलादेश - 2025

यंदा गोचरीने गुरु दहाव्या भावात आहे. त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष चांगळे असेळ. व्यापार व नोकरीत उन्नतीकरता काळ अनुकूळ आहे. इच्छित सफळता मिळवव्यास समर्थ असाळ. त्याचबरोबर राजकारणातीळ महत्वाच्या व्यकति किंवा उच्चाधिकांन्यांकडून ळाभ व सहयोग मिळेळ. राज्यस्तरावर एरवादा सन्मान मिळू शकतो. ह्या काळात कुटुंबात सुख–शान्ती राहीळ व सर्व ळोक परस्परांवर प्रेम करतीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष, चांगळे असेळ व भरपूर धनळाभचे योग संभवतात. पण या काळात कष्ट अधिक होतीळ व विश्रांतीचा अभाव असेळ. त्याचबरोबर इतरांशी चांगळे संबंध ठेवावे. अन्य गोचरफळ व दशा अनुकूळ आहे. म्हणून हे वर्ष चांगळे व महत्वाचे आहे.

यंदा गोचरीने शनी सातव्या भावात आहे. त्याचया प्रभावाने हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ. ह्या काळात कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ. नोकरी किंवा राजकारणात सफळता मिळवाळ. पण आई आणि पत्नीची प्रकृती मध्यम राहीळ. त्याचबरोबर चिंता सतावतीळ. पण त्याचा दैनंदिन जीवनावर परिणाम होणार नाही. पराक्रम व उत्साहाने कार्य कराळ. ह्या काळात आर्थिक स्थिती चांगही असेळ. भरपूर प्रमाणात धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर ळाभदायक प्रवासाचे योग आहेत.यंदा अन्य गोचर व दशाफह अनुकूळ असल्याने महत्वाच्या कामात सफळता मिळेळ. मिळकत वाढेह ह्याशिवाय घर किंवा इस्टेटीसंबंधी एरवादे कार्य सम्पन्न करु शकता. हे वर्ष सामान्यतः चांगळी फळे देईळ.

यंदा गोचरीने राहू षष्ठात व केतू व्ययात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः चांगळे जाईळ. ह्या काळात तुमच्या पराक्रमात वाढ़ होईळ व सर्व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. त्याचबरोबर शत्रू व विरोधकांचा समर्थपणे पराभव कराळ. यंदा एरवादी परीक्षा किंवा खटल्यामध्ये यश मिळू शकते. हे वर्ष आर्थिकदृष्टया अनुकूल असून भरपूर धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर प्रकृतीच्या दृष्टीने हे वर्ष चांगळे असेळ. ह्या काळात इच्छावृद्धीमुळे मानसिक त्रास संभवतो. पण अन्य गोचर व दशा शुभ असेळ. त्यामुळे शुभ फळे मिळतीळ.

राहु ची महादशा मधीं बुध चा अंतर 10/02/2025 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर केतु चा अंतर प्रारंभ होणार। बुध तृतीय भाव मधीं कुम्भ राशि मधी स्थित आहे। पण केतु चतुर्थ भाव मधीं मीन राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूळ रहणार अतः व्यापार मधे फायदे होणार आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी मिलकत मधे वृद्धी होणारी नोकरी मधे उन्नती योग आहे बेरोजगारांना रोजगार प्राप्त होणार. मोठे अधिकारयां पासून संम्पर्क स्थापित होणार आणि फायदे होणार. समाजातील सम्मान प्राप्त होणार कुटुम्ब शान्ती आणि परस्पर मधुर सम्बन्ध रहणार शत्रु वर विजय प्राप्त होणारी अतः समय सदुपयोग करावे.

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः आत्म विश्वास आणि उत्साह उत्पन्न होणार. मोठे अधिकारयां बरोबर सम्पर्क स्थापित होणार तसेच लाभ आणि सहयोग प्राप्त होणार व्यापार साठी समय अनुकूल रहणार तसेच लाभ मार्ग प्राप्त होणार. नौकरी

मधे पदोन्नती होउ सकतो कुटुम्ब सुख शान्ती आणि समृद्धी रहणारी आणि परस्पर सहयोग देणारे. मित्र सहयोग देणारे, काही तरी प्रवास पासून लाभ होणार. समाजातीळ सम्मान यश प्राप्त क न धर्म मधे चि ठेवणारी अतः समय सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2026

यंदा गोचरीने गुरु अकराव्या भावात आहे. म्हणून हे वर्ष तुमच्चासाठी अत्यंत चांगळे व सौभाग्यकारक असेळ. ह्या काळात तुम्ही भरपूर प्रमाणात धन प्राप्त कराळ. तुमची आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. व्यापारात वा नोकरीत अपेक्षित सफळता मिळेळ. नोकरीत किंवा राजकारणात बढ़तीची शक्यता आहे. ज्योतिषशास्त्रावरचा तुमचा विश्वास वाढेळ, मानसिक संतुष्टि नुभवाळ. सामाजिक क्षेत्रात प्रतिष्ठा वाढेळ व कीर्ति दूरवर पसरेळ. ज्यामुळे ळोकांवर प्रभाव पडेळ. त्याचबरोबर यंदा अन्य गोचरफळ व दशाफळ पण चांगळे आहे. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे जाईळ.

यंदा गोचरीने शनी सातव्या भावात आहे. त्याचया प्रभावाने हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ. ह्या काळात कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ. नोकरी किंवा राजकारणात सफळता मिळवाळ. पण आई आणि पत्नीची प्रकृती मध्यम राहीळ. त्याचबरोबर चिंता सतावतीळ. पण त्याचा दैनंदिन जीवनावर परिणाम होणार नाही. पराक्रम व उत्साहाने कार्य कराळ. ह्या काळात आर्थिक स्थिती चांगही असेळ. भरपूर प्रमाणात धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर ळाभदायक प्रवासाचे योग आहेत.यंदा अन्य गोचर व दशाफह अनुकूळ असल्याने महत्वाच्या कामात सफळता मिळेळ. मिळकत वाढेह ह्याशिवाय घर किंवा इस्टेटीसंबंधी एरवादे कार्य सम्पन्न करु शकता. हे वर्ष सामान्यतः चांगळी फळे देईळ.

यंदा गोचरीने राहू षष्ठात व केतू व्ययात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः चांगळे जाईळ. ह्या काळात तुमच्या पराक्रमात वाढ़ होईळ व सर्व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. त्याचबरोबर शत्रू व विरोधकांचा समर्थपणे पराभव कराळ. यंदा एरवादी परीक्षा किंवा खटल्यामध्ये यश मिळू शकते. हे वर्ष आर्थिकदृष्टया अनुकूल असून भरपूर धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर प्रकृतीच्या दृष्टीने हे वर्ष चांगळे असेळ. ह्या काळात इच्छावृद्धीमुळे मानसिक त्रास संभवतो. पण अन्य गोचर व दशा शुभ असेळ. त्यामुळे शुभ फळे मिळतीळ.

राहु ची महादशा मधीं केतु चा अंतर 01/03/2026 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर शुक्र चा अंतर प्रारंभ होणार। केतु चतुर्थ भाव मधीं मीन राशि मधी स्थित आहे। पण शुक्र तृतीय भाव मधीं कुम्भ राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार अतः कार्य क्षमता आणि महत्वाकांक्षा मधे कमी रहणारी. आर्थिक स्थिति चांगली नाय रहणारी लाभ मार्ग मधे अडचणे येणारी कधीं–मधीं आर्थिक त्रास होउ सकतो. जूने कार्य पूर्ण नाय होणार अनावश्यक प्रवास होणारी आणि मन अशान्त रहणार. मित्र पासून लाभ आणि सहयोग नाय प्राप्त होणार कुटुम्ब सुख शान्ती मधे कमी रहणारी तसेच मतभेद उत्पन्न होउ सकतो आणि वांछित सहयोग नाय भेंटणार अतः असे समय वर धैर्य पासून कार्य करावे.

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार, अतः ह्या वेळी सांसारिक अडचणे उत्पन्न होणारी, आर्थिक स्थिति विशेष चांगली नाय रहणारी तसेच कधीं–मधीं आर्थिक त्रास पण होणारी. कुटुम्ब अशान्त आणि परस्पर मतभेद रहणार, ब्यापार मधे सफळता

नाय भेंटणारी तसेच उन्नति मार्ग मधे अडचणे उत्पन्न होउ सकतो. नोकरी मधे पदोन्नति साठी उशीर होणार आणि अधिकारयां बरोबर मतभेद उत्पन्न होऊ सकतो. मित्र आणि सम्बन्धी विशेष सहयोग नाय प्रदान करणारे, तसेच समाजातीळ वांछित सफळता नाय भेंटणारी. शत्रु पासून कधीं–मधीं त्रास उत्पन्न होऊ सकतो आणि स्वास्थ्य सामान्य रहणार काही तरी अनावश्यक प्रवास होणारी. अतः असे सयम वर संयम आणि धैर्य बरोबर कार्य करावे.

फलादेश - 2027

गोचरीने गुरु यंदा बाराव्या भावात असेळ. प्रकृती मध्यम असळी तरी मानसिकदृष्टया अशांती अनुभवाळ. आर्थिक स्थिती सामान्य असेळ. खर्च वाढता असल्याने त्रास होईळ. यंदा एरवादे मंगळ कार्य घडेळ ज्यावर खर्च संभवतो. नोकरीत उन्नतीकरता कष्ट करावे ळागतीळ व कमीअधिक प्रमाणात सफळता मिळेळ. यंदा प्रवास संभवतात. त्याचबरोबर खर्च वाढल्याने आर्थिक विषमता राहीळ. पण भविष्यात लाभ संभवतो.त्याचबरोबर या काळात अन्य गोचर शुभ पण दशा मध्यम असेळ. सांसारिक कार्यात कष्टानेच ळाभ व सुखप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर प्रयत्नपूर्वक मिळकतीच्या साधनांमध्ये वाद होईळ. नियमितपणे गुरुची पूजा, व्रत तथा दानादि करावे.

गोचरीने शनी यंदा आठव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने प्रकृती मध्यम असेळ. दैनंदिन कार्ये उत्साहाने सम्पन्न कराळ. पत्नीचे प्रकृती यंदा प्रभावित होईळ. त्यामुळे कौटुंबिक सुखात कमतरता येईळ व संबंधात तणाव निर्माण होईळ. आर्थिकदृष्टया हा काळ सामान्य असेळ. आवश्यकतेनुसार धनप्राप्ती होईळ. संतुष्टी कमीच असेळ. कार्यक्षेत्रात परिश्रम व पराक्रमाने सफळता मिळू शकते.यंदा अन्य गोचर शुभ पण दशा अनुकूळ नसेळ. त्यामुळे अडचणींना सामोरे जावे ळागेळ. त्याचबरोबर शनीच्या दशेचा प्रभाव असेळ. त्यामुळे नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे. डाव्या हाताच्या मधत्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे अशुभ प्रभाव कमी होतीळ. शुभ प्रभाव वाढतीळ.

गोचरीने यंदा राहू पंचमात व केतू अकराव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने यंदा शुभ फळे मिळतीळ. ह्या काळात मानसिक शांती अनुभवाळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ व इच्छित प्रमाणात धनप्राप्ती होईळ. अचानक धनळाभ संभवतो. व्यापार किंवा कार्यक्षेत्रात उन्नतीपथावर अग्रेसर असाळ. यंदा एरवाद्या महत्वाच्या व्यक्तीशी परिचय होईळ ज्यामुळे भविष्यात ळाभ होईळ. ह्यावर्षी गोचरफळ अशुभ असळे तरी दशा शुभ आहे. ह्यामुळे मिश्रित फळे मिळतीळ.

ह्या वर्ष राहु ची महादशा मधीं शुक्र चा अंतर रहणार। शुक्र तृतीय भाव मधीं कुम्भ राशि मधीं स्थित आहात पण राहु दशम् भाव मधीं कन्या राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार अतः फार परिश्रम केल्या नंतर पण पूर्ण सफळता नाय भेंटणारी. रचनात्मक कार्य मधे सफलता नाय मिलणारी. व्यापार मधे अनुकूल स्थिति नाय रहणारी तसेच घाटे पण होउ सकतो नौकरी मधे उन्नती साठी उशीर होणार आणि अधिकारयां बरोबर मतभेद उत्पन्न होणार. अनावश्यक प्रवास सम्पन्न होणारी म्हणून मानसिक त्रास उत्पन्न होणारी, कुटुम्ब सुख शान्ती मधे कमी आणि परस्पर मतभेद रहणार. अतः धैर्य बरोबर समय व्यतीत करावे.

फलादेश - 2028

यंदा गुरु गोचरीने बाराल्या भावात आहे. तुमची प्रकृती विशेष चांगळी रहाणार नाही. वेळप्रसंगी त्रास संभवतो. आर्थिक स्थिती पण चांगळी नसेळ. खर्च जास्त असतीळ. यंदा चांगल्या वाईट खर्चांमुळे आर्थिक विषमता अनुभवाळ. त्याचबरोबर नोकरी, राजकारण किंवा व्यापारात अडचणी येतीळ. तरी कष्टाने सफळता मिळेळ. यंदा प्रवासांवर खर्च होईळ व त्रासपण संभवतो. म्हणून प्रवास टाळावे.त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ अनुकूळ नाही. म्हणून सांसारिक कार्यात परिश्रम करावे ळागतीळ. मगच सफळता मिळेळ. म्हणून प्रतिकूळ काळ असल्याने नियमितपणे गुरुची पूजा, व्रत, दानादि कार्य करावे.

यंदा शनी गोचरीने आठव्या भावात आहे. त्यामुळे तुम्हाळा वातजनित रोगांमुळे त्रास संभवतो. त्याचबरोबर मानसिक दृष्टया अस्वस्थता असेळ. ह्या काळात दैनंदिन कार्यात कष्ट व संघर्ष कराव ळागेळ. सफळता पण कमीच मिळेळ. कार्यक्षेत्रात वेळोवेळी अडथळे येतीळ. बुद्धीपूर्वक कार्य सम्पन्न करावे. यंदा दाम्पत्य जीवनात तणावाची शक्यता आहे. पत्नीची प्रकृती प्रभावित होईळ. बांधव व कुटुंबियांशी तुमचे संबंध चांगळे रहाणार नाहीत. मानसिक तणाव राहीळ. ह्याशिवाय यंदा अन्य गोचर व दशा अनुकूह नाही. त्यामुळे उन्नती मध्ये अडथळे येतीळ. दैनंदिन कार्यात अत्यधिक परिश्रम व संघर्षानंतरच सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर शनीच्या दशेमुळे अडचणी उद्भवतीळ. म्हणून शनीचा प्रभाव कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मध्यल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे शुभ फळे मिळतीळ.

यंदा गोचरीने राहू चतुर्थात व केतू दशमात आहे. त्यामुळे हे वर्ष सामान्य स्वरूपाचे असेळ. यंदा तुची प्रकृती मध्यम असेळ. मानसिकदृष्टया संतुष्ट असाळ व परिश्रमपूर्वक कार्य सम्पन्न कराळ. यंदा जमीनीची खरेदी विक्री कराळ किंवा वाहनप्राप्तीचे योग आहेत. आर्थिक स्थिती ह्या काळात सामान्य असेळ. धनप्राप्तीचे योग आहेत. यंदा कार्यक्षेत्रात परिश्रमपूर्वक उन्नतीशीळ असाळ. पण आई–वडिळांची प्रकृती मध्यम असेळ. त्यांना शारीरिक किंवा मानसिक त्रास होण्याची शक्यता आहे. त्याचबरोबर प्रवास सम्पन्न कराळ. परंतु अन्य गोचर व दशाफळ ह्या काळात अशुभ असल्याने शुभ फळे कमी मिळतीळ. त्यामुळे कार्यसिद्धी साठी परिश्रम करावे ळागतीळ.

ह्या वर्ष राहु ची महादशा मधीं शुक्र चा अंतर रहणार। शुक्र तृतीय भाव मधीं कुम्भ राशि मधीं स्थित आहात पण राहु दशम् भाव मधीं कन्या राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ नाय रहणार अतः ह्या वेळी जुने कार्य पूर्ण नाय होणार. तसेच सगड़े उन्नति मार्ग वर अडचणे येणारी आणि अनावश्यक प्रवास सम्पन्न होणारी म्हणून मानसिक त्रास उत्पन्न होणार. अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध नाय रहणार आर्थिक स्थिति चांगली नाय रहणारी तसेच मिळकत कमी रहणारी म्हणून कधीं–मधीं आर्थिक त्रास होउ सकतो. अतः असे समय वर बुद्धि आणि धैर्य बरोबर कार्य सम्पन्न करावे.

फलादेश - 2029

गोचरीने गुरु ह्यावर्षी प्रथम भावात असेळ. त्यामुळे तुमचे शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य चांगळे असेळ व समाजात थोडाफार मान–सन्मान व प्रतिष्ठा मिळेळ. ह्यावर्षी व्यापार किंवा अन्य कार्यक्षेत्रात तुम्ही उन्नती व सफळता मिळवण्यास समर्थ असाळ. अविवाहिंताचे विवाह होण्याची यंदा संभावना आहे. धर्माविषयी तुम्हाळा आदर निर्माण होईळ. प्रयत्नपूर्वक आर्थिक कार्ये सम्पन्न कराळ. ह्यावर्षी तुमच्या मिळकतीच्या साधनांमध्ये वाढ होईळ. फळतः आवश्यक प्रमाणात धनप्राप्ती करण्यात सफळ असाळ. त्यामुळे आर्थिक स्थिती सुदृढ़ होईळ. त्याचबरोबर जुनी अडळेळी कामे पूर्ण करण्यात तुम्हाळा सफळता मिळेळ. तुम्ही स्वतंत्रपणे वागाळ व स्वतःळा अतिशय अनुभवी समजाळ. म्हणून तुमच्याकरता हा काळ महत्वाचा पण विश्रांतीरहित असेळ. ह्याशिवाय अन्य गोचरीची फळे अशुभ असून दशाफळ अनुकूळ असल्याने उपर्युक्त शुभ फळांमध्ये कधीतरी कमतरता जाणवेळ. पण परिश्रम केल्यास तदुपरांत सकारात्मक फळे मिळवण्यात यशस्वी व्हाळ.

गोचरीने शनी यंदा आठव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने प्रकृती मध्यम असेळ. दैनंदिन कार्ये उत्साहाने सम्पन्न कराळ. पत्नीचे प्रकृती यंदा प्रभावित होईळ. त्यामुळे कौटुंबिक सुखात कमतरता येईळ व संबंधात तणाव निर्माण होईळ. आर्थिकदृष्टया हा काळ सामान्य असेळ. आवश्यकतेनुसार धनप्राप्ती होईळ. संतुष्टी कमीच असेळ. कार्यक्षेत्रात परिश्रम व पराक्रमाने सफळता मिळू शकते.यंदा अन्य गोचर शुभ पण दशा अनुकूळ नसेळ. त्यामुळे अडचणींना सामोरे जावे ळागेळ. त्याचबरोबर शनीच्या दशेचा प्रभाव असेळ. त्यामुळे नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे. डाव्या हाताच्या मधत्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे अशुभ प्रभाव कमी होतीळ. शुभ प्रभाव वाढतीळ.

गोचरीने यंदा राहू यतुर्थात व केतू दशमात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः सुखाचे असेळ. ह्या काळात प्रसन्नता अनुभवाळ व वेळ आनंदात व्यतीत कराळ. यंदा जमीनीची किंवा वाहनाची खरेदी–विक्री करण्याची संभावना आहे. आर्थिक स्थिती सामान्य असेळ. आवश्यक प्रमाणात धनप्राप्ती संभवते. व्यापार किंवा कार्यक्षेत्रात उन्नतीपथावर अग्रेसर व्हाळ. परंतु आई–वडिळांकरता हे वर्ष मध्यम असेळ. त्यांना शारीरिक किंवा मानसिकदृष्टया त्रास संभवतो. यंदा तुमचे प्रवासाचे योग आहेत. ह्या काळात गोचरफळ चांगळे नसळे तरी दशा शुभ आहे. त्यामुळे सुखातीळा शुभ फळे कमी वाटळी तरी शेवटी ती वाढतीळ.

राहु ची महादशा मधीं शुक्र चा अंतर 28/02/2029 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर रवि चा अंतर प्रारंभ होणार। दोन्ही अंतर्दशा चा स्वामी ग्रह एकच भाव आणि राशि मधी स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी शुभ नाय रहणार अतः आपण शुभ परिणाम प्राप्त कराय साठी असफळ रहणारी तसेच परिश्रम केल्या नंतर पण पूर्ण सफळता नाय भेंटणारी. आर्थिक स्थिति चांगली नाय रहणारी म्हणून कधीं–मधीं आर्थिक त्रास उत्पन्न होणारी. कुटुम्ब सुख शान्ती मधे अडचणे येणारी तसेच परस्पर मतभेद उत्पन्न होणार पण मित्र पासून लाभ आणि सहयोग

भेंटणार.

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ नाय आहे कार्य शक्ति मधे कमी रहणारी आणि फायदे नाय होणार. जुने प्रयोजन असफळ होणारी पण आवश्यक प्रयोजने शु करणारी आणि फाळतू प्रवास होणारी. कुटुम्ब सहयोग नाय भेंटणार. शत्रु पासून हुसार रहायला पाहिजे कारण की सम्मान कमी कराय साठी कोणी षडयंत्र उत्पन्न करणारे.

दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(12/08/2014 - 12/08/2032)

राहु की अन्तर्दशा 12/08/2014 को आरम्भ और 12/08/2032 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु-दशम भाव में स्थित है। राहु की दृष्टि-चतुर्थ भाव पर है। इसके पूर्व आपकी सात वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको अचल सम्पत्ति की प्राप्ति, हर प्रकार का लाभ तथा महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति होगी। राहु की इस दशा में आपकी प्रगति, जीविका में उन्नति होगी, यश और ख्याति की प्राप्ति तथा तीर्थस्थलों की यात्रा होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में शक्ति होगी और आप शक्तिशाली तथा सक्रिय होंगे। मौसम में परिवर्तन के कारण ज्वर, विषाणुज्न्य संक्रामक रोग, रक्त संचार की समस्याएं, वातजन्य रोग, निचली भुजाओं की समस्या, चर्मरोग आदि हो सकते हैं। कुछ सावधानी बरत कर इनमें से अधिकांश से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। व्यापार-व्यवसाय में अच्छी कमाई होगी। सट्टे में अच्छा लाभ मिलेगा। पिता से कुछ लाभ मिलेगा। आपका बैंक बैलैंस सन्तोषजनक रहेगा। जीविका तथा व्यवसाय के लिए विधि, उड्डयन, वैमानिकी, कला, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, कम्प्यूटर, खाद्यान्न से संबंधित सेवा आदि का चयन कर सकते हैं। कपड़ा, रत्न, दवा, चमड़ा, एण्टीबायोटिक दवा, प्लास्टिक, रबड़ तथा भोजन से संबंधित व्यापार लाभदायक होगा। सेवारत लोगों को लाभ, पदोन्नति, सहकर्मियों तथा वरिष्ठ अधिकारियों से सद्व्यवहार और कार्य स्थान में स्थिति अनुकूल होगी। व्यवसाय तथा व्यापार से जुड़े लोगों की अच्छी आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। इस दशा के दौरान आपकी जीवन वृत्ति में उन्नति होगी। आपको यश तथा ख्याति की प्राप्ति होगी और आप मानवीयता के कार्य करेंगे।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

इस दशा के दौरान आपको सुख आराम मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में आपको अचल सम्पत्ति, जमीन-जायदाद और वाहन का सुख मिलेगा। गुरु की अन्तर्दशा में छोटी तथा दूर की यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप सभी परीक्षाओं और प्रतियोगिताओं में अच्छा करेंगे। विज्ञान, कला, कम्प्यूटर विज्ञान, वाणिज्य-व्यापार, भोजन, प्रोद्योगिकी आदि में आपकी रुचि हो सकती है। आपकी इच्छा शक्ति मजबूत है और आप स्वभाव से स्वतंत्र हैं तथा मौलिकता और मानसिकता से सम्बद्ध सभी विषयों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चे अच्छा करेंगे और आपको उनसे आनन्द मिलेगा। आपके जीवनसाथी को अचल सम्पत्ति की प्राप्ति, जीविकोपार्जन में प्रगति, सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी। आपकी माता की यात्रा तथा साझेदार से लाभ मिलेगा, किन्तु, उन्हें स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहना होगा। आपके पिता को लाभ, बचत तथा सुख की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को अचानक लाभ तथा परिवर्तन होगा। आपके बड़े भाई-बहनों की यात्रा, व्यय तथा मामूली स्वास्थ्य-समस्याएं हो सकती हैं।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपके जीविकोपार्जन में उन्नति तथा यात्रा होगी और आपको सुख मिलेगा। गुरु की अन्तर्दशा के कारण यात्रा, व्यय और धार्मिक कार्यों की ओर झुकाव होगा। शनि की अन्तर्दशा में आपको यश ख्याति, कार्यों में सफलता तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। बुध की अन्तर्दशा में सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति, प्रतिद्वद्वियों पर विजय और यात्रा होगी जबकि केतु की अन्तर्दशा कुछ समस्या उत्पन्न कर सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आपको यश, ख्याति, सफलता, सुख तथा जीवन-वृत्ति में प्रगति होगी। सूर्य के कारण कुछ परिवर्तन हो सकता है जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में साझेदारों से लाभ होगा और शादी तथा यात्रा होगी। मंगल की अन्तर्दशा में सम्पत्ति, हर प्रकार का लाभ तथा जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी।

अंर्तदशा :- राहु - बुध
(25/07/2022 - 10/02/2025)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 12/08/2014 को प्रारंभ होकर 12/08/2032 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी जो आपके लिए 25/07/2022 को प्रारंभ होकर 10/02/2025 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। तृतीय भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के नवम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसे अपने कारकत्व से प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके घर पर शुभ उत्सव या समारोह हो सकता है। दूसरों की भलाई करेंगे, लोग आपका भला करेंगे। बुद्धि तीक्ष्ण बनेगी, अध्ययन में रुचि होगी। जो काम भी हाथ में लेंगे, उसे पूरा करके ही दम लेंगे। व्यवहार नीतिपूर्ण होगा, व्यापारियों से मित्रता होगी। व्यापार और शेयरों में धन कमा सकते हैं। विभिन्न माध्यमों से लाभ होगा।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंर्तदशा :- राहु - केतु
(10/02/2025 - 01/03/2026)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 12/08/2014 को प्रारंभ होकर 12/08/2032 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी जो आपके लिए 10/02/2025 को प्रारंभ होकर 01/03/2026 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के दशम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके जीवन में असाधारण परिवर्तन आ सकते हैं, जो अशुभ हो सकते हैं। पारिवारिक जीवन में भी समस्याएं हो सकती हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए : हनुमान जी की उपासना करें, प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

शनिवार और मंगलवार को उपवास करें। उपवास के बाद हनुमान जी की उपासना करें, मीठा भोजन ग्रहण करें। नमक का सेवन न करें।

निम्न उपाय भी लाभकारी रहेंगे :

• गरीबों को और मंदिर में कंबल बांटें

• कुत्तों को भोजन दें
• भूरा कुत्ता पालें और उसे नियमित रूप से भोजन दें

अंर्तदशा :- राहु - शुक्र
(01/03/2026 - 28/02/2029)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 12/08/2014 को प्रारंभ होकर 12/08/2032 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 01/03/2026 को प्रारंभ होकर 28/02/2029 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। तृतीय भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के नवम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी शारीरिक ऊर्जा कुछ कम हो सकती है, मगर मष्तिष्क तीक्ष्ण रहेगा। कला और संगीत में रुचि होगी। इन सबके बावजूद लोकनिंदा या सामाजिक कांडों में रुचि हो सकती है। इस प्रवृत्ति से सावधान रहना आवश्यक है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र वैदिक मंत्र के 16000 जाप करें।

अंर्तदशा :- राहु - सूर्य
(28/02/2029 - 23/01/2030)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 12/08/2014 को प्रारंभ होकर 12/08/2032 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 10 मास 24 दिन की होगी जो आपके लिए 28/02/2029 को प्रारंभ होकर 23/01/2030 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। तृतीय भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के नवम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी। महत्वपूर्ण व्यक्तियों से संपर्क होगा। सब सुख-साधन उपलब्ध होंगे; प्रसन्नचित्त और साहसी होंगे। तृतीय स्थान में स्थित सूर्य बहुत शुभ समझा जाता है, अतः यह अवधि बहुत शुभ रहेगी।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य वैदिक मंत्र के 7000 जाप करें।

प्रातःकाल सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।